हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जून, 2015 वर्ष 14 अंक 04

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

माहे मुबारक

आ गया माहे मुबारक आ गया
माहे रमज़ानुल मुबारक आ गया!
दिन में रोज़े रात में ज़ाइद नमाज़ें हैं
बरकती दिन बरकती सब रातें हैं!
सहरी खाओ और खिलाओ शौक़ से
रोज़ा खोलो और खुलाओ शौक से!
हो तिलावत और दुआयें खूब हों
अच्छी अच्छी बातें भी हाँ खूब हों!
नेकियाँ हों और ग़रीबों का खयाल
दिल में शैताँ आये उसकी क्या मजाल!
रहमतें या रब नबी पर और सलाम
और सब अस्हाब पर भी हों मुदाम।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
कुर्आन का महीना रमज़ान	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	14
हराम माल से बचें और बचाएं	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	16
हम रमज़ान कैसे गुज़ारें	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	17
इस्लाम, ईमान और एहसान		22
रोज़े के मसाइल	फौज़िया फ़ाजिला	25
आदरणीय लेखकों की सेवा में	इदारा	27
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	28
घर वापसी मगर किस की	इं0 जावेद इक़बाल	31
महिला विरोधी कुप्रथाएं	डॉ0 मुहम्मद अहमद	35
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	इदारा	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद- वह (अल्लाह) समझ इनायत करता है जिसको चाहता है और जिसको समझ मिली उसको बड़ी खूबी मिली और नसीहत वही कबूल करते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं[(1)(269)], और जो तुम खैरात में से खर्च करोगे या कोई मिन्नत कबूल करोगे तो बेशक अल्लाह को सब मालूम है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं[(2)(270)], अगर जाहिर करके दो खैरात तो क्या अच्छी बात है, और अगर उसको छुपाओ और फ़कीरों को पहुंचाओ तो वह बेहतर है तुम्हारे हक़ में, और दूर करेगा तुम्हारे कुछ गुनाह, और अल्लाह तुम्हारे कामों से खूब खबरदार है[(3)(271)], उनको राह पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं और लेकिन अल्लाह राह पर जिसको चाहे ला दे, और जो कुछ तुम माल खर्च करोगे सो अपने ही वास्ते, जब तक कि अल्लाह ही की रज़ा जोई में खर्च करोगे, और जो कुछ खैरात खर्च करोगे सो वह तुम को पूरी मिलेगी और तुम्हारा हक हरगिज मारा न जाएगा[(4)(272)], खैरात उन फ़कीरों के लिए है जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, चल फिर नहीं सकते मुल्क में नावाफिक लोग उनके सवाल न करने से उनको मालदार समझते हैं तुम उनको उनके चेहरों से पहचान सकते हो, वह लोगों से लिपट कर सवाल नही करते[(5)], और जो कुछ काम की चीज़ खर्च करोगे वह बेशक अल्लाह को मालूम है[(6)(273)],

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी अल्लाह जिसको चाहता है दीन की बातों में दानाई और खैरात करने में समझ इनायत करता है कि किस नियत से और किस माल से और किसको और किस प्रकार के मोहताज को देना चाहिए और जिसको समझ इनायत हुई उसको बड़ी नेमत और बड़ी खूबी मिली।

2. यानी जो कुछ खैरात की जाये थोड़ी या बहुत भली नियत से या बुरी नियत से छुपा कर या लोगों को दिखा कर या मन्नत मानी जाये किसी प्रकार की तो बेशक खुदा तआ़ला को पूरा इल्म है सबका और जो लोग माल खर्च करने और नज्र में हुक्मे इलाही के खिलाफ करते हैं उनका कोई मददगार नहीं, अल्लाह जो चाहे उन पर अ़ज़ाब करे मिन्नत कबूल करने से वाजिब हो जाती है, अब अगर अदा न की तो गुनहगार होगा, और नज्र अल्लाह के अलावा किसी की जाइज़ नहीं, मगर यह कहे कि अल्लाह के वास्ते फुलांने आदमी को दूंगा उस नज्र का सवाब फुलां को पहुंचे तो कुछ हरज की बात नहीं।

3. अगर लोगों को दिखाने की बात न हो तो खैरात करना लोगों के सामने

शेष पृष्ठ .....05.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

सुब्ह के समय या ज़वाल के बाद जंग-

हज़रत नोमान बिन मुक़्रिन रज़ि0 कहते हैं कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सुब्ह के समय जंग न फरमाते तो फिर लड़ाई में इतनी देर फरमाते कि ज़वाल हो जाता और हवायें चलने लगतीं और मदद नाजिल होती। (अबू दाऊद—तिर्मिजी)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दुश्मन का सामना होने की आरज़ू न करो और जब सामना हो जाये तो सब्र करो (यानी डट जाओ। (बुखारी)

जंग एक धोका है-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 और जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया लड़ाई एक धोका है।

(बुखारी—मुस्लिम)

शहादत के विभिन्न प्रकार-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पाँच आदमियों को शहादत का दर्जा हासिल होगा। ताऊन (महामारी) से मरने वाला, हैजे से मरने वाला, डूब के मरने वाला, दबके मरने वाला, और जो अल्लाह के रास्ते में मारा जाये। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोग शहीद किसको कहते हो, उन्होंने कहा जो अल्लाह की राह में मारा जाये वह शहीद है। फरमाया इस सूरत में तो मेरी उम्मत में शहीद बहुत थोड़े होंगे, उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फिर कौन कौन शहीद है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अल्लाह के रास्ते में मर जाये वह शहीद है, जो ताऊन (महामारी) में मर जाये वह शहीद है जो हैज़े में मरे वह शहीद है, जो डूब कर मरे वह शहीद है। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख्स अपने माल की हिफाज़त करते हुए मारा जाये वह शहीद है। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबुल आवर सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन तुफैल से रिवायत है (यह अशर—ए—मुबश्शरा में से थे) कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि जो अपने माल की वजह से मारा जाये, वह शहीद है और जो अपना खून यानी अपनी जान की हिफाजत में मारा जाये वह शहीद है और जो अपने दीन

की वजह से मारा जाये वह शहीद है और जो अपने घर वालों की हिफाजत में मारा जाये वह शहीद है।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे बताइये कि अगर कोई मेरा माल लेना चाहे तो मैं क्या करूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया न दो अर्ज किया अगर वह मुझ से लड़े, फरमाया तुम भी लड़ो, अर्ज किया अगर वह मुझे क़त्ल कर दे, फरमाया तुम शहीद होगे, उसने कहा अगर मैं उसको क़त्ल कर दूँ फरमाया वह दोज़ख़ में होगा।

(मुस्लिम)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

भी बेहतर है ताकि दूसरों को भी शौक और रगबत हो और छुपा कर खैरात करना भी बेहतर है ताकि लेने वाला न शरमाये मुख्तसर यह कि दिखाना छुपाना दोनों बेहतर हैं मगर हर मौक़े और मस्लिहत का लिहाज़ जरूरी है।

4. जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को मुसलमानों के अलावा औरों पर सद्क़ा करने से रोका और इसमें यह मस्लिहत थी कि माल ही की गरज़ से दीने हक की तरफ रागिब हों, आगे यह फरमा दिया कि यह सवाब जब ही तक मिलेगा कि अल्लाह की खुशी मतलूब होगी तो यह आयत नाज़िल हुई और इसमें आम हुक्म आ गया कि अल्लाह की राह में जिसको माल दोगे तुमको उसका सवाब दिया जायेगा मुस्लिम और गैर मुस्लिम किसी की विशेषता नहीं यानी जिस पर सद्क़ा करो उसमें मुस्लिम की तख़सीस नहीं अलबत्ता यह ज़रूर है कि वह अल्लाह की रिजा के लिए हो।

5. यानी ऐसों को देना बड़ा सवाब है जो अल्लाह की राह और उसके दीन के काम में क़ैद हो कर चलने फिरने खाने कमाने से रुक रहे हैं और किसी पर अपनी जरूरत जाहिर नहीं करते जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब थे अह्ले सुफ्फ़ा ने घर बार छोड़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत इख्तियार की थी इल्मेदीन सीखने के लिए और फसादियों फितना परवरों पर जिहाद करने को, इसी प्रकार अब भी जो कोई कुर्आन को हिफ़्ज़ करे या इल्मे दीन में मश्गूल हो तो लोगों पर अनिवार्य है कि उनकी मदद करें और चेहरे से उनको पहचानना, इसका मतलब है कि उनके चेहरे ज़र्द और बदन दुबले हो रहे हैं और जद्दोजुहद के आसार उनकी सूरत से जाहिर हो रहे हैं।

6. उमूमी तौर पर और खास कर ऐसे लोगों पर जिनका जिक्र हुआ।

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन का महीना, रमज़ान

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

रमज़ान का महीना जिसमें कुर्आन उतारा गया, लोगों के मार्गदर्शन के लिए और मार्गदर्शन तथा सत्य असत्य के अंतर प्रभावों के साथ, अतः तुममें जो कोई इस महीने को पाए उसे चाहिए कि वह उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों से (छूटे हुए रोज़ों की) गिन्ती पूरी करले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो ताकि तुम कृतज्ञ (शुक्र गुजार) बनो।

(अल बक़रहः 185)

निः सन्देह हमने उसे एक बरकत वाली रात में अवतरित किया है। (अददुखानः 2)

हमने इसे (अर्थात कुर्आन को) क़द्र की रात में अवतरित किया। (अल क़द्रः1)

रमज़ान के महीने में एक रात है जिसको लैलतुल क़द्र (क़द्र की रात) कहते हैं, इसी को लैलतुल मुबारकः बरकत वाली रात भी कहा गया है। यह रात बाज़ रिवायात के अनुसार रमज़ान के अन्तिम दशक में आती है, अपितु बाज़ रिवायात से ज्ञात होता है कि यह रमज़ान के अन्तिम दशक की ताक़ (विषम) रातों में से किसी रात में आती है इस रात के विषय में सू—रए—क़द्र ही में बताया गया है कि यह हज़ार महीनों से बेहतर है, अर्थात इस रात में जो उपासना नमाज़ के रूप में या तिलावत (कुर्आन पाठ) के रूप में या दुआ व दुरूद के रूप में की जाएगी उसका सवाब (प्रतिफल) हज़ार महीनों की उपासना से बढ़ कर मिलेगा, ऐसे हज़ार महीने जिनमें इस रात को न जोड़ा जाय, इस उम्मत पर यह अल्लाह का बड़ा करम (कृपा) है, फिर इस रात को नियुक्त करके नहीं बताया गया है अन्तिम दशक में गुप्त रखा गया ताकि उम्मत के लोग उसकी खोज में कई रातों में जाग कर अपने रब की उपासना करें इस प्रकार उस छुपी बरकत वाली रात में भी उपासना मिल जाएगी और इनशा अल्लाह उसका खूब सवाब मिलेगा, और दूसरी रातों में इबादत करने का सवाब भी मिल जाएगा वह भी सत्तर गुना बढ़ा कर मिलेगा, जैसा कि बाज़ रिवायतों में इसका संकेत मिलता है।

यह पवित्र कुर्आन लौहे महफूज़ में सुरक्षित है सू—रए—वाकिआ आयत 77, 78 में बताया गया है।

निश्चय ही यह प्रतिष्ठित कुर्आन है, जो एक सुरक्षित किताब में (अर्थात लौहे महफूज़ में) अंकित है, जिसे केवल पाक साफ व्यक्ति ही हाथ लगाते हैं।

उस लौहे महफूज़ से अल्लाह तआला ने यह कुर्आन रमज़ान की मुबारक रात अर्थात क़द्र की रात (लैलतुल क़द्र) में इस संसार के ऊपर जो आकाश

(आसमाने दुन्या) है उस पर उतारा, फिर वहां से आवश्यकतानुसार जिब्रील फ़िरिश्ता द्वारा अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा जाता रहा और 23 वर्षों में यह पूरा उतार दिया गया।

रिवायत से सिद्ध है कि हमारे प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के महीने में हज़रत जिब्रील से कुर्आन का दौर किया करते थे अर्थात परस्पर सुन्ते सुनाते थे, और तमाम सहाबा रमज़ान की रातों में नमाज़ में कुर्आन पढ़ा करते थे। यह भी सिद्ध है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक रमज़ान में अपने सहाबा के साथ जमाअत से नमाज़ पढ़ी जिसमें आप ने कुर्आन मजीद काफ़ी मात्रा में सुनाया, इसी नमाज़ का नाम तरावीह की नमाज़ है, तरावीह की यह नमाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन रातों में पढ़ाई। हर रात सहाबा की तादाद बढ़ती गई चौथी रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह विशेष नमाज़ जमाअ़त से नहीं पढ़ाई और पूछने पर बताया कि मुझे तुम लोगों का इस नमाज़ से शौक़ देख कर डर लगा कि कहीं अल्लाह तआ़ला की ओर से तुम पर फ़र्ज़ न हो जाए फिर अगर तुम इसमें कोताही करो तो बड़े गुनाह में फंस जाओ। (यह रिवायत के शब्द नहीं हैं अपितु उसका सारांश है)

उसके पश्चात सहा–बए–किराम यह नमाज़ अपने अपने तौर पर पढ़ने लगे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहांत के पश्चात ख़लीफ़ा अबू बक्र रज़ि0 के समय में भी यही हाल रहा, हज़रत उमर रज़ि0 का काल आया तो आप ने निर्णय लिया कि अब यह नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाए, वह प्रतिष्ठित सहाबी हैं उन्होंने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इच्छा को भांप लिया था कि वह यही चाहते थे कि बाद में यह नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाय, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का काल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल से मिला हुआ था अतः यदि वह यह नमाज़ जमाअ़त से जारी करते तब भी शंका होती कि कहीं यह वाजिब तो नहीं है, परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 के काल से इस शंका का भय न रहा अतः हज़रत उमर रज़ि0 ने इसे जमाअ़त से पढ़ने का आदेश दिया।

तरावीह की रकअतों में मतभेद हुआ है कुछ विद्वान मानते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आठ रकअतें पढ़ाईं थीं और हज़रत उमर रज़ि0 ने भी आठ ही रकअतें जमाअत से पढ़वाईं, परन्तु बहुत से विद्वानों का मानना है कि बाज़ रिवायतों और बाज़ बड़े सहाबा के अमल से सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीस रकअतें पढ़ाईं थी और हज़रत उमर रज़ि0 ने भी बीस रकअतें पढ़ने का आदेश दिया। हरमैन शरीफ़ैन अर्थात हरमे मक्का मुकर्रमा और मस्जिदे नबवी में अब तक बीस रकअतें तरावीह पढ़ी जाती हैं। दुन्या भर के हनफी मुसलमान भी बीस रकअ़तें तरावीह पढ़ते हैं जब कि अहले हदीस हज़रात आठ रकअत तरावीह पढ़ते हैं।

मैं सात साल सऊदी अरब (रियाज़) में रहा हूँ और मस्जिद ही से सम्बन्धित रहा यहां रमज़ान की बीस रातों तक आठ रकअत तरावीह पढ़ी जाती थी परन्तु इक्कीस्वीं रात से दो क़िस्तों में बीस रकअतें जमाअ़त से पढ़ी जाती थीं, आठ रकअतें इशा के फर्ज़ों और दो सुन्नतों के पश्चात और शेष बारह रकअ़तें बारह बजे रात के पश्चात सहरी से पहले तक पढ़ी जाती थीं। बीस रातों में आठ रकअत तरावीह के पश्चात वित्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाती इक्कीस्वीं रात से वित्र पिछली रात बीस रकअत तरावीह के बाद जमाअ़त से अदा की जाती।

एक खास बात वहां मैंने यह देखी कि जिस रात तरावीह में पवित्र कुर्आन ख़त्म होता तो नमाज़ ही में सू–रए–नास के खत्म पर बड़ी लम्बी दुआ की जाती है, दुआ का एहतिमाम तो हमारे यहाँ भी है परन्तु सलाम फेरने के बाद।

उक्त सारी बातों से यह सिद्ध करना है कि रमज़ान कुर्आन का महीना है, इस मास में रोज़ाना अधिक से अधिक कुर्आन पढ़ने का एहतिमाम (प्रबन्ध) करें और तरावीह अवश्य पढ़ें, तरावीह की नमाज़ फर्ज़ वाजिब तो नहीं है परन्तु सुन्नते मुअक्किदा है जिसे अकारण छोड़ने पर पकड़ होगी। फिर जिस मस्जिद में पूरा कुर्आन सुनाने का प्रबन्ध है अगर आप प्रतिबन्ध से वहीं तरावीह पढ़ेंगे तो नमाज़ में कुर्आन ख़त्म करने का सवाब पाएंगे।

हमारे बहुत से भाई कुर्आने मजीद नहीं पढ़े हैं उनको चाहिए कि घर में या मस्जिद में कोई कुर्आन पढ़ रहा हो तो उससे निवेदन करें कि कुछ कुर्आन वह उसे सुना दे, फिर आप नमाज़ पढ़ने के लिए कुछ सूरतें तो याद ही किये हुए हैं आप उन सूरतों को नमाज़ों में, तथा नमाजों के पश्चात, और चलते फिरते ख़ूब पढ़ें कि वह कुर्आन ही तो है।

निःसंदेह रमज़ान कुर्आन का महीना है अतः इस लेख में उक्त बातें प्रस्तुत की गई, अब उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाना है कि जिस बुद्धि वाले व्यस्क मुसलमान को यह महीना मिले वह पूरे महीने रोज़े अवश्य रखे कि इस माह में रोजे रखना फर्ज है, हमारे बहुत से भाई सुस्ती काहिली से और शैतान के चरके में आकर रोज़े छोड़ बैंठते हैं वह महापाप करते हैं, दीनदार भाइयों को चाहिए कि ऐसे भाइयों को हिकमत से टोक कर रोज़े रखने पर तैयार करें, और जो बीमार हों और रोज़े न रख सकें या सफर पर होने के कारण रोज़े रखने में असुविधा हो और वह रोज़े न रख सकें वह दूसरे दिनों में छूटे रोज़े पूरे कर लें।

आपके कुछ भाई ऐसे भी मिलेंगे जिनके खाने पीने का ठीक से प्रबन्ध न होगा आप चुपके से उनकी मदद करें हो सके तो आप उनकी सहरी का प्रबन्ध कर दें या शाम को रोज़ा खुलवा दें और शाम का खाना भी खिला दें।

अगर आप साहिबे निसाब हैं अर्थात 612 ग्राम चाँदी या उसे खरीदने भर के रूपयों के मालिक हैं तो आप पर ज़कात फर्ज है अतः

आपके जिन रूपयों या गहनों (जेवरों) पर साल बीत गया है उसका हिसाब कर के उसका चालीसवां भाग (ढाई प्रतिशत) निकाल कर ग़रीबों की मदद पर या दीनी मदारिस पर ख़र्च कर सकते हैं, इसमें कोताही न करें।

कुछ भाई रोजे की भूख प्यास में बड़े गुस्से का इज़हार (प्रकटीकरण) करते हैं और अपने मातहतों पर गुस्सा गर्मी दिखाते हैं उनको ऐसा न करना चाहिए तथा लड़ाई–झगड़े गाली गलौज से बहुत दूर रहना चाहिए। अल्लाह तौफीक़ दे हर बस्ती में किसी एक रोज़ेदार का एतिकाफ करना भी अहम सुन्नत है, जिसे अल्लाह तौफीक दे यह सुन्नत अदा करे, इसके लिए 20 रमज़ान की मग़रिब की नमाज़, एतिकाफ़ करने वाली मस्जिद में पढ़ना चाहिए और फिर एतिकाफ की नीयत से ईद का चाँद दिखने तक मस्जिद ही में रहना चाहिए और ज़ियादा से ज़ियादा वक्त इबादत, तिलावत, दुरूद में लगाना चाहिए नींद आये तो वहीं सोना है, पाख़ाना पेशाब या फर्ज़ गुस्ल के लिए बाहर निकल सकते हैं, वुज़ू अगर मस्जिद में मुशकिल हो तो मस्जिद से मिली हुई जगह पर वुज़ू करलें, अगर गांव या मुहल्ले की मस्जिद में कोई एतिकाफ न करेगा तो पूरी बस्ती और मुहल्ले वालों पर सुन्नत छोड़ने पर पकड़ होगी लेकिन अगर एक आदमी भी एतिकाफ कर लेगा तो सब की तरफ से सुन्नत अदा हो जाएगी।

ईद के रोज हर साहिबे निसाब पर सद–कए–फित्र वाजिब होता है जिसे फित्रा भी कहते हैं, यह सदका साहिबे निसाब अपनी तरफ से अदा करे और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ से भी अदा करे बीबी या बालिग़ औलाद अपना फ़ित्रा खुद अदा करें, अगर घर मालिक, बालिग़ औलाद और बीवी की तरफ से सदक़ा देदे तो अदा हो जाएगा।

सद–कए–फित्र एक आदमी की तरफ से आधा साअ़ गेहूँ यानी एक किलो 600 ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत आदा करें, आधा साअ़ की तौल में मतभेद हुआ है। हमारे निकट यह तौल ठीक है परन्तु एहतियातन कुछ बढ़ा कर दे तो अच्छी बात है और ज़ियादा सवाब है, सद–कए–फ़ित्र यद्यपि ईद के दिन वाजिब होता है परन्तु इसे रमजान के अन्त में अदा कर दिया जाए तो ज़ियादा सवाब मिलेगा।

सद–कए–फ़ित्र और ज़कात गरीब मुसलमानों (जो साहिबे निसाब न हों) का हक़ है, ग़रीब ग़ैर मुस्लिम की मदद किसी और रकम से करें। ज़कात या सद–कए–फ़ित्र अपने बाप, दादा, माँ, दादी, नाना, नानी और बेटी, बेटों, पोती, पोतों, नवासी, नवासों को नहीं दे सकते, सादात को भी ज़कात या फ़ित्रे की रक़म नहीं दे सकते दूसरे ग़रीब सम्बन्धी जो साहिबे निसाब न हों, जैसे भाई, बहन या चाचा, साला, फुफा, फूफी वग़ैरह को दे सकते हैं। ग़रीब सादात हज़रात की मदद करना हो तो दूसरी हलाल कमाई से मदद करें।

अल्लाह हमारी मदद फ़रमाए और रमज़ान का पूरा पूरा हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ से नवाज़े। ☐☐

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं एवं स्वभाव व आचार-

जब अल्लाह तआला किसी क़ौम के सुधार के लिए किसी को नबी की हैसियत से ऐसे इंसान को चुनता है जो अक़्ल व समझ, चरित्र व आचरण, हौसला व हिम्मत के लिहाज़ से सब में मुमताज़ (विशिष्ट) होता है और यह इम्तियाज़ (विशिष्टा) दरअसल खुदा का ही दिया हुआ होता है। इसके लिए उसको आसमानी आदेश दिये जाते हैं उन्हीं के मुताबिक वह अपनी क़ौम को रूश्द व हिदायत (सद्मार्ग) की तरफ बुलाता है। अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी को मंसबे नबूवत के मिलने से पहले उसकी ज़िंदगी का ज़माना गुज़रता है उसमें उसके रब की तरफ से इंसानी खूबियाँ फ़ितरत के दायरे में रखी गयी होती हैं और वह उच्चतर विशेषताएं होती हैं। उन विशेषताओं को उनकी क़ौम देखती है और पसंद करती है और क़ौम के अन्दर रहने की वजह से क़ौम उसकी उच्चतर और नेक ख़सलतों से वाक़िफ़ (परिचित) हो चुकी होती है।

लिहाज़ा जब वह नबूवत मिलने पर रूश्द व हिदायत की दावत देता है तो उसकी दावत को उसकी क़ौम के ज़िद्दी और नफ़्स परस्त लोग सिर्फ़ यह कह कर रद कर दिया करते हैं कि यह शख़्स अब ऐसी बातें करने लगा है जो हमारे बड़ों ने नहीं की। यह हमारे बड़ों के तरीक़े से हट गया है लेकिन इसी के साथ साथ वह उसकी नेक और इंसानी ख़सलतों से इन्कार नहीं कर पाते हैं। लिहाज़ा वह लोग अपनी मज़हबी आदतों और तौर तरीक़े को जिनको अपनी पैदाईश के वक़्त से इख़्तियार किये होते हैं सिर्फ तअस्सुब और हठधर्मी में उन आदतों और तौर तरीके के ख़िलाफ़ कोई बात सुनने को तैयार नहीं होते हैं। इसी के साथ वह नबी के अख़लाक़ी व इंसानी विशेषताओं से इन्कार भी नहीं करते हैं। नबी उनसे कहता कि भाई तुम हमको अच्छी तरह जानते हो फिर भी मेरी बात की तरफ ध्यान नहीं देते हो। इसी की तरफ़ कुरआन मजीद की यह आयत इशारा करती है:

अनुवादः " मौंने तुममें इससे पहले एक उम्र गुज़ारी है ताज्जुब है तब भी तुम नहीं समझते" (सू—रए— यूनुस—16)

नेक नियती, शराफत, पक्का इरादा, सब्र व हिम्मत, मज़बूती अच्छा मामला, हमदर्दी व अखलाक़े, नबी की वह खूसुसीयात हैं जिनको जो भी ज़रा निष्पक्ष हो कर उनकी बात सुनता है, तो मानने पर मजबूर हो जाता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही मामला था कि आप 40 साल उनमें महबूब और पसंदीदा रहे थे। उसके बाद जब आप उनके ग़लत रिवाज और बिगड़े हुऐ मज़हब से रोकने और अच्छे अख़्लाक़ और मज़हब

की तरफ़ दावत दने लगे तो वह सब उनसे नाराज़ हुए। लेकिन इस बात से सख्त मज़हबी दुश्मनी रखने के बाद भी उनमें से कुछ न कुछ लोग उनकी बात पर ग़ौर करते और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत कुबूल करते। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इंसानी हमदर्दी, सच्चाई और पाक दामनी और अच्छे आचरण से खूब परिचित थे। लिहाज़ा जो शख़्स भी निष्पक्ष हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सुनता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गरवीदा (मोहित) हो जाता यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुकसान पहुंचाने की नीयत से आने वाला भी आता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्व्यवहार को देखता तो उसमें अचानक तबदीली आ जाती फिर भी क़ौम की बड़ी तादाद आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होती थी। अपने कानों में रूई डाल लेते कि न सुनेंगे और फिर आपको उस पैग़ाम से रोकने के लिए सख़्त रवय्या इख़्तियार करते और जुल्म करते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जब नबूवत की ज़िम्मेदारी पड़ी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी गिरांबारी महसूस करते हुए फिक्रमंदी का इज़हार अपनी ज़ौजा मुहतरमा हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ि0 से किया तो उन्होंने यह कह कर तसल्ली दी और इत्मिनान दिलाया कि आप परेशान न हों। खुदा की क़सम अल्लाह तआला आपको कभी ज़लील व रुसवा न करेगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिलह रहमी और रिश्तेदारी का पास व लिहाज़ करते हैं, दूसरों का बोझ हलका करते हैं, मोहताजों के काम आते हैं, मेहमान की ज़ियाफत (सत्कार) खातिर मदारात करते हैं। राहे हक़ (सत्य मार्ग) की तकलीफ़ों और मुसीबतों में मदद करते हैं[1]।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ि0 ने यह बात अक़्ले सलीम (शुद्ध बुद्धि) और फितरते सहीहा (उचित प्रकृति) और अपनी ज़िंदगी के तजुर्बों (अनुभवों) और लोगों से जानकारी की बुन्याद पर कही थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी नेक आदतों और सच्चाई और अमानतदारी की वजह से क़ौम की तरफ से "अस्सादिकुल अमीन" (सत्यवादी, विश्वस्नीय) का खिताब (उपाधि) मिला था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अति सच्चे और अति अमानतदार थे। इसी लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अदावत रखने के बावजूद आपकी दूसरी बात का सब सत्कार भी करते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अमानतें भी रखते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदद और हमदर्दी के मौक़ों पर सबका ख़्याल रखते थे यहां तक कि काबा के नव निर्माण के अवसर पर आप सल्लल्लाहु

1. सही बुख़ारी, बाब कैफ़काना बदइल वही इला रसूलिल्लाह सल्ल0

अलैहि व सल्लम ने भी सबके साथ मिल कर पत्थर उठाए और किसी अच्छे उद्देश्य के लिए मशविरा होता तो उसमें शरीक़ होते। किसी को अचानक मुसीबत या परेशानी होती तो मदद करते। इसकी एक मिसाल यह है कि एक शख्स जिससे अबू जहल ने ऊँट खरीदे थे और उसकी कीमत अदा करने में बहुत टाल मटोल का रवय्या इख्तियार कर रख था जब भी वह कीमत लेने आता, तो उसको टाल जाता। कुरैश के नवजवानों की एक बैठक में उसने यह बात रखी लोगों को मज़ाक सूझा कि अबू जहल का मामला है वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बहुत दुश्मन बना हुआ है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उससे भिड़ा दिया जाए और तमाशा देखा जाए उस शख्स से कहा कि फलां साहब जो सामने बैठे हैं उनसे जा कर मदद लो। वह शख्स गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अबू जहल की बदमामलगी (दुर्व्यवाहर) का शिकवा किया और मदद चाही। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अगरचे यह बात बहुत दुश्वार थी कि अबू जहल से जाकर फरियाद करें या फरमाईश करें कि उसकी क़ीमत अदा कर दें मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी हमदर्दी के जज़्बे के तहत ख़तरे की परवाह न की और उससे कहा कि चलो हम तुम्हारे लिए कोशिश करते हैं और अबू जहल के मकान पर जा कर दरवाज़ा खटखटाया और उसके निकलने पर उससे कहा कि इनकी कीमत अदा कर दो। उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जुरअत (साहस) का ऐसा रोब बैठा कि उसने कहा कि अच्छा अदा करते हैं और घर के अन्दर जा कर क़ीमत ला कर अदा कर दी। अबू जहल उसके बाद अपने साथियों में आया तो साथियों ने अबू जहल का मज़ाक उड़ाया। उसने इक़रार किया कि मैं मरऊब (भयभीत) हो गया और ऐसा करने पर मजबूर हो गया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस तरह का रवय्या अपने ज़ाती फायदे के लिए नहीं होता था। तकलीफ उठाते थे और बदला लेने का ख्याल भी नहीं आता था। लेकिन किसी को ज़रूरत पड़ जाए तो उसकी मदद करते थे। सबके साथ नरम रवय्या रखते थे। इसका इज़हार स्वयं अल्लाह तआला की ओर से किया गया है:–

अनुवादः "सब यह अल्लाह की रहमत है आप उनके लिए नरम स्वभाव वाले हैं और अगर ज़बान व दिल के सख़्त होते तो यह सब आपके पास से छूट जाते सो आप उनके कुसूर मआफ कीजिए और उनके लिए मग़फिरत की दरख्वास्त भी करते रहिए और काम चलाने में उनसे मशविरा भी कर लिया करें। फिर जब आपका पक्का इरादा हो जाया करे तो अल्लाह तआला पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह तआला भरोसा करने वालों से महब्बत करता है।"

(आले इमरान–159)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अगर किसी की ज़ाती दुश्मनी होती तो उससे आप बदला लेने का मामला न करते लेकिन सैद्धान्तिक और दीनी हिकमत हो तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रवय्या सख्त होता। आपकी विशेषता में जो बात बयान की गयी है उसके अल्फाज़ यूं आये हैं:–

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊँचे अख़लाक के बारे में बताते हुए कहते हैं कि :–

"मैंने आपको किसी जुल्म व ज़्यादती का बदला लेते नहीं देखा, जब तक की अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की खिलाफ़वर्ज़ी न हो और उसके हुक्मों की इज़्ज़त पर आँच न आए हाँ अगर अल्लाह तआला के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसके गौरव पर आंच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते।"

हज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत दयालु और दयावान थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई जरूरतमंद आता तो आप उससे वादा ज़रूर करते और अगर कुछ होता तो उसी समय उसकी ज़रूरत पूरी फरमाते। एक बार नमाज़ खड़ी हो चुकी थी कि एक देहाती आगे बढ़ा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कपड़ा पकड़ कर कहने लगा " मेरी एक मामूली सी ज़रूरत बाक़ी रह गयी है, मुझे डर है कि कहीं भूल न जाऊँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके साथ तशरीफ ले गए जब उसने अपना काम कर लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस तशरीफ लाए और नमाज़ अदा फ़रमाई।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहनशीलता कुव्वतेबर्दाश्त, कुशादा दिली और सब्र व दृढ़ता के वाक़िआत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खादिम हज़रत अनस की वह शहादत है जो उन्होंने इस सिलसिले में दी है। उस वक्त वह बहुत कमसिन थे, उन्होंने कहा "मैंने नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की 10 साल खिदमत की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी किसी बात पर कभी न टोका और न यह फ़रमाया कि फ़लां काम तुमने क्यों किया और फलां काम क्यों न किया?"

हज़रत उमर रज़ि0 रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया "मेरी इस तरह आगे बढ़ कर तारीफ व बड़ाई न करो, जिस तरह नसारा ने हज़रत ईसा बिन मरियम अलै0 के साथ किया था। मैं तो सिर्फ एक बन्दा हूँ। तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो[1]।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली औफा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व स ल्लम को इसमें कोई संकोच और लज्जा न होती थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी गुलाम या किसी बेवा के साथ चलें यहां तक की उसकी ज़रूरत पूरी हो जाए।

हज़रत अनस कहते हैं "मदीने की लौंडियों और बांदियों में से कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लेती और जो कुछ कहना होता कहती थीं और जितनी दूर चाहती ले जातीं"।

अदी बिन हातिम ताई रज़ि0 आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको

---

1. सही बुखारी, किताबुल अंबिया

शेष पृष्ठ.....15.... पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

इफ़तार की तैयारी और उस समय का हर्षोल्लास–

लीजिये बात करते करते रोज़ा इफ़तार करने का समय आ गया[1] तैयारियां हो रही थी। यह कुछ स्वाभाविक बात भी है कि भूखे, प्यासे रहने के बाद आदमी में खाने पीने के प्रति लालसा और ईश्वरीय देन के प्रति आदर की भावना में वृद्धि हो जाती है, और शरीअत ने भी इस प्रसन्नता को जो रोज़ेदार के इफ़तार के समय होती है, रोज़े का एक पुरस्कार और मानव प्रवृत्ति का एक अधिकार मात्र स्वीकार किया है। कहा गया है कि रोज़ेदार को दो आनन्द प्राप्त होते हैं, एक इफ़तार के समय और एक अपने पालनहार से भेंट के अवसर पर जब उसको रोज़े का पुरस्कार मिलेगा। रोज़ेदारों की निगाहें स्वाभाविक रूप से पश्चिम की ओर हैं या अपनी घड़ियों पर अथवा मुअज्ज़िन के अधरों पर। इस समय भी कुछ अल्लाह के बन्दे अपने समय का मूल्य चुकाने में लगे हुए हैं और एक क्षण व्यर्थ किये बिना कुरआन मजीद की तिलावत या अल्लाह का नाम लेने में व्यस्त हैं, कि यह मूल्यवान समय फिर हाथ न लगेगा।,

इफ़तार–

सहसा मुअज्ज़िन की ध्वनि कानों से टकराई "अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर" और अपनी अपनी बस्ती के रिवाज के अनुसार गोला दग़ा अथवा मस्जिदों के मीनारों से रोशनी चमकी "अल्लाहुम्म लका सुमतु व बिका आमन्तु व अला रिज़्क़िका अफ़तरतु" (ऐ अल्लाह! तेरे लिए मैंने रोज़ा रखा, तुझ पर ईमान लाया और तेरे दिये हुए रिज़्क पर अब रोजा खोल रहा हूँ) "बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम" लीजिये रोज़ा खुल गया, मगर संतुष्टि पूर्ण पेट भर भोजन करने का अभी अवसर नहीं कि मग़रिब की नमाज़ तैयार है। कुछ लोग इसी इफ़तार को इफ़तार और खाना बना लेते हैं। हिन्दुस्तान में अधिकतर लोग मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर भोजन करते हैं और अपने नित्य कार्यों की पूर्ति करते हैं।

खजूर से रोज़ा खोलना शुभ माना जाता है, कि वह शुद्ध खाद्य पदार्थ भी है और सुन्नत भी, "हम खुर्मा हम सवाब[1]"। इफ़तार में भी हिन्दुस्तान में विशेष आयोजन एवं वेराइटीज़ (Varieties) पाई जाती हैं और यहां कई ऐसी चटपटी वस्तुएं तैयार की जाती हैं जो दूसरे देशों में नहीं पाई जाती हैं। इनका

---

1. सूर्यास्त होते ही किसी खाद्य पदार्थ अथवा पानी द्वारा रोज़ा खोलना, इफ़तार करना कहलाता है और जिन खाद्य पदार्थों से रोजा खोला जाता है उसे "इफ़तारी" कहते हैं अनु0

1. फ़ारसी भाषा में एक कहावत जिसका अर्थ है, "अपनी इच्छा पूर्ति के साथ पुण्य भी"। अनु0

बड़ा अंश चना है जो भारत की विशेष उपज है।

मस्जिदों में कुरआन मजीद पाठ की समाप्ति तथा समापन समारोह-

अब रोज़े की दिनचर्या वही रहेगी जिसका ऊपर वर्णन किया गया। कुरआन मजीद रमज़ान मास की विभिन्न तारीखों में समाप्त होगा। तरावीह तो पूरे रमज़ान में है, हाँ एक कुरआन मजीद पूर्ण रूप से सुन लेना मुसलमान आवश्यक समझते हैं। कुछ 'होशियार' लोग किसी एक मस्जिद में पाँच सात दिन में कुरआन मजीद सुन लेते हैं, फिर शेष मास में हल्की फुल्की तरावीह पढ़ते रहते हैं। लेकिन इससे आलसपन विदित होता है और धार्मिक भावना के प्रतिकूल है। सामान्यतः सत्ताइसवीं रात्रि या इसके आस पास कुरआन मजीद मस्जिदों में समाप्त होते हैं, और हिन्दुस्तान में इस अवसर पर मिठाई बांटने का भी आम रिवाज है।

रमज़ान के अन्तिम दशक में एतिकाफ़-

रमज़ान के अन्तिम अशरा (दहे) का एतिकाफ़ भी बड़े सवाब का काम है और एक प्रिय सुन्नत है। उन्नीसवें रोज़े को सूर्यास्त होने के समय बहुत से दीनदार मुसलमान एतिकाफ़ की नियत से मस्जिद में आते रहते हैं। अब वह ईद का चाँद देख कर ही मस्जिद से बाहर निकलेंगे। एतिकाफ़ की दशा में शौच आदि के अतिरिक्त मस्जिद से बाहर जाना मना होता है।

❖❖❖

जगनायक.....

अपने घर बुलाया। बांदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको अपने और अदी के दरमियान रख दिया और खुद ज़मीन पर बैठ गए। हज़रत अदी रज़ि0 कहते हैं "इससे मैं समझ गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बादशाह जैसे शान व शौकत वाले नहीं हैं"।

हज़रत अनस रज़ि0 बयान फरमाते हैं "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमार का हाल पूछते थे, जनाज़े में शरीक होते थे, और गुलाम की दावत कबूल फ़रमाते थे"।

हज़रत जाबिर रज़ि0 बयान करते हैं "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमज़ोर के ख़्याल से अपनी रफ़्तार सुस्त फरमा लेते थे और उसके लिए दुआ फरमाते थे"।

हज़रत अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं बंदा हूँ, बंदे की तरह खाता हूँ और बंदे की तरह बैठता हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद घर की सफाई फरमा लेते, ऊँट को बांध लेते और अपने जानवर को चारा भी दे देते। अपने खिदमतगार के साथ खाना खाते और आटा गूँधने में उसका हाथ बटाते और बाज़ार से सौदा भी ले आते।

❖❖❖

हराम माल से बचें और बचाएं

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

हदीस शरीफ में है कि कियामत में किसी बन्दे के कदम (पग) उस वक्त तक अपनी जगह से हट न सकेंगे, जब तक उससे चार बातों का जवाब न ले लिया जाये, उन चार बातों में एक बात यह है कि माल कहाँ से प्राप्त किया और कहाँ खर्च किया।

माल खुदा का एक ऐसा अनोखा तथा बहुमूल्य उपहार है जिससे इस संसार तथा आखिरत (अगले जीवन) के अनेकों कार्य होते हैं अतः इस वरदान पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और उसका शुक्र यह है कि उस माल को वैध कामों पर खर्च किया जाये इस वरदान की यही क़द्र है। माल के कमाने और खर्च में असावधानी माल की कद्र न करना और अल्लाह की ना शुक्री है जो लोग ग़लत तरीकों से माल हासिल करते हैं या हराम तरीकों से रूपया कमाते हैं वह खुदा के ना शुक्र गुजार (कृतघ्न) बन्दे होते हैं, फिर ऐसे हराम माल का नतीजा भी प्रायः खराब होता है, माल जिस प्रकार आता है उसी प्रकार जाता भी है बल्कि हराम माल कभी आपदा का कारण बन जाता है अतः आवश्यक है कि मुसलमान मर्द हो या औरत ध्यान दे कि उसका माल किस राह से आता है और कहाँ खर्च होता है। सब जानते हैं कि माल प्राप्त करने के अवैध साधन क्या हैं, चोरी का माल अपहरण का माल, घूस का माल, ब्याज का माल, धोखा दे कर कमाया हुआ माल, अधिकार के बिना जकात का माल या सद्के का माल या कुर्बानी की खाल का पैसा लेना, झूठे पीर बन कर अनजानो को ठगना, झूठी गवाही दे कर रूपये वसूल करना आदि यह सभी माल अवैध तथा वर्जित हैं अवैध व्यापार के माल में अवैध मिली सम्पत्ति में तथा किसी भी प्रकार के हराम माल में न कोई बरकत होती है न खुदा की रहमत नाज़िल होती है। यह माल एक छांव है, अभी आया अभी गया, हराम माल इस संसार में चाहे साथ दे जाये और चाहे उससे कुछ लाभ मिल जाये परन्तु आखिरत (अगले जीवन) में विपत्ति लेकर आयेगा और सच्ची बात तो यह है कि इस संसार में भी बहुत से हराम माल वालों का परिणाम बुरा हुआ है।

इस बात पर भी नज़र रखना चाहिए कि माल कहां खर्च हो रहा है कभी ऐसा होता है कि माल वैध राह से कमाया परन्तु खर्च गलत जगह किया या खर्च अवैध कामों पर किया जैसे ग़लत रस्मों (कुप्रथाओं) अनावश्यक कामों या घूस देने पर खर्च करना यह विधि भी बड़ी ही हानिकारक तथा ईमान को विकृत करने वाली है इस प्रकार के खर्च से आखिरत (अगला जीवन) तो खराब होता ही है मगर दुन्या भी बिगड़ती है।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं कि कल के धनवान आज निर्धन तथा फटे हाल हैं कल जिनके द्वार पर धूम मची रहती

शेष पृष्ठ.....34.... पर

देवनागरी लिपि में उर्दू

हम रमज़ान कैसे गुज़ारें

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

एक मरतबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मिम्बर के करीब हो जाओ सहाब—ए—किराम रज़ि0 मिम्बर के करीब हो गये। जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर के पहले दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब दूसरे दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब तीसरे दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुत्बे से फारिग़ हो कर नीचे उतरे तो सहाब—ए—किराम रज़ि0 ने अर्ज किया कि हमने आज आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिम्बर पर चढ़ते हुए ऐसी बात सुनी जो पहले कभी नहीं सुनी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस वक़्त जिबरील अलैहिस्सलाम मेरे सामने आये थे। (जब पहले दर्जे पर मैंने क़दम रखा तो) उन्होंने फरमाया! हलाक हो जाये वह शख़्स जिसने रमज़ानुल मुबारक का महीना पाया, फिर भी उसकी मग़फिरत न हुई। मैंने कहा आमीन। फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा कि हलाक हो जाये वह शख़्स जिसके सामने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र हो और उसने दुरूद न पढ़ा। मैंने कहाः आमीन, जब तीसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा कि हलाक हो जाये वह शख़्स जिसके सामने उसके वालदैन या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पाये और वह उनकी खिदमत करके जन्नत में न दाखिल हो जाये। मैंने कहा आमीन।

रमज़ान मग़फिरत का कहीना है—

रमज़ान ऐसा ज़र्री मौक़ा है कि उसमें कोशिश करे तो एक रमज़ान सारे गुनाह बख्शवाने के लिए काफी है। जो शख़्स रमजान के रोज़े रखे और यह यकीन करके रखे कि अल्लाह तआला के तमाम वादे सच्चे हैं, और तमाम आमाले हस्ना पर बेहतर बदला अता फरमायेगा, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स रमज़ान के रोज़े ईमान व एहतिसाब के साथ रखे उसके अगले पिछले गुनाह बख्श दिये जायेंगे। ईमान व एहतिसाब का मतलब ये है कि अल्लाह तआला के तमाम वादों पर यकीन कामिल हो और हर अमल पर सवाब की नीयत करे। और इख्लासो लिल्लाहियत और रिज़ाये इलाहि का हुसूल पेश नज़र हो और हर अमल के वक़्त मर्ज़ी—ए—इलाही को देखे, ईमान व एहतिसाब ही है जो इंसान के अमल को फर्श से अर्श तक पहुंचा देता है। असलन इसी का फुक़दान है। मुसलमानों का असल मर्ज़ बद नियती नहीं बल्कि

बेनियती यानी वह सिरे से नीयत ही नहीं करते हम वुज़ू करते हैं मगर उसमें नीयत नहीं करते। हम दूसरे अरकाने दीन अदा करते हैं मगर ईमान व एहतिसाब हमारे पेशे नज़र नही रहता। जब बहुत से लोग किसी काम को करते हैं तो वह रस्म बन जाती है रोज़े का एक आम माहौल होता है ऐसे में कोई इस अन्देशे से रोज़ा रखे कि हम रोज़ा न रखेंगे तो छुप कर खाने पीने से क्या फायदा? ये ख्याल आया तो रोज़े की रूह निकल गई। बीमारियों में भी अकसर भूखा रहना पड़ता है सफर में भी अकसर खाना नहीं मिलता, इसलिए रोज़े की खुसूसियत सिर्फ भूखा रहना नहीं है, रोज़े की हक़ीक़त है कि अल्लाह के हुक्म की तामील में जो चीज़ें छोड़ने को कही गयी हैं उनको छोड़ देना, पहले हम ये कैफियत पैदा करें कि अल्लाह तआला बरहक है सवाब की लौ लगी हो और दिल को तसल्ली हो कि सवाब मिल रहा है इसी में लुत्फ आये।

आमाल की मक़्बूलियत की अलामत व आसार-

किसी इबादत की खुसूसियत और उसकी मक़बूलियत की दलील ये है कि उसकी अदायगी से दिल के अन्दर रिक़्क़त, नर्मी, तवाज़ोअ़ और इन्किसारी का जज़्बा पैदा हो लेकिन जब इसके बरअ़क्स किब्रो गुरूर और उज्ब पैदा हो तो समझ लेना चाहिए कि हमारी इबादत मक़्बूल नहीं हुई। उसमें कमी रह गयी है। इसलिए उन चीज़ों को दूर करने के लिए ईमान व एहतिसाब को पेशे नज़र रखना और उसका इस्तेहज़ार रहना ज़रूरी है। बे सोचे समझे बगैर नीयत के रोज़ा रख लेना कोई और इबादत करना बे माना है। एक साहब फरमाने लगे मैं इसलिए रोज़ा रखता हूँ कि जो मज़ा इफ़तार के वक़्त आता है वह दुनिया की किसी नेअ़मत में नहीं हालांकि उनका अल्लाह तआला पर ईमान भी नहीं था । हमें चाहिए कि हम दिन में कई बार नीयत को ताज़ा कर लिया करें। हर वक़्त इस्तेहज़ार रखें रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इब्ने आदम के हर अमल पर उसको दस से 700 गुना तक सवाब मिलेगा अल्लाह ने फरमाया सिवाये रोज़ा के कि वह मेरे लिए है। और मैं ही उसका बदला दूंगा। ये बन्दा तमाम महबूब चीज़ें मेरे लिए छोड़ता है इसलिए मैं खुद ही बदला दूँगा।

रोज़े आमाल में ताक़त पैदा करते हैं-

दूसरी बात यह है कि दीन के जितने भी अरकान हैं वह ताक़त पैदा करते हैं यानि इबादत दूसरी इबादत के लिए मुआविन साबित होती है। और उसके लिए तक़वियत का बाइस बनती है। जिस तरह से एक ग़िज़ा दूसरी गिज़ा के लिए मुआविन साबित होती है। इसी तरह एक फर्ज़ की अदायगी दूसरे फराएज़ की अदाएगी में मुआविन साबित होती है। और उसको ताक़त फराहम करती है। ये बात नही है कि हर रुक्न अलग अलग है। हर एक की फर्ज़ियत और उसकी अहमियत तो बहर

हाल अपनी जगह है। मगर एक दूसरे से अलग नही बलिक एक दूसरे की मदद के लिए है इसतरह से रोज़ा साल के पूरे ग्यारह महीने की इबादत के लिए ताक़त पैदा करता है। रोज़े की वजह से दूसरी इबादत की अदाएगी में ज़ौको शौक़ पैदा होता है और तवानाई मिलती है।

रोज़े का मक़सद नफ़्स पर क़ाबू पाना है-

तीसरी बात यह है कि रोज़े का मक़सद ये है कि नफ़्स पर काबू पाया जाये और रोज़े की वजह से नफ़्स पर काबू पाना आसान हो जाये दीन का ज़ौको शौक़ पैदा हो इबादत की अदाएगी में शौक़ हो। अल्लाह तआला का इरशाद है अनुवादः ऐ ईमान वालो रोज़े तुम पर फ़र्ज किये गये जैसे तुम से पहलों पर किये गये थे ताकि तुम तक़वा वाले हो जाओ। (यानि हर काम के करते वक़्त अल्लाह तआला की मर्ज़ी का ख़्याल रखा जाये) तक़वा का तर्जुमा बाज़ लोगों ने लिहाज़) से किया है। यानी हर काम के करते वक़्त उसका लिहाज़ रखा जाये कि ये काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ है या नहीं? हलाल और हराम की तमीज़ हो जाए इस तरह से मश्क़ हो जाये कि फितरत बन जाये। जिस तरह से ईद के दिन आप खाने पीने में झिझक महसूस करते हैं। इस वजह से आपको खाना पीना खिलाफ़े आदत मालूम होता है हालांकि ये आर्ज़ी चीज़ थी। इसी तरह से गुनाहों से इज्तिनाब, मआसी से परहेज़, गीबतो बद गोई, गुस्सा व बुग्ज़ से परहेज इस तरह हो कि आपकी फितरत बन जाये। जो चीज़ें दाईमी तौर पर हराम हैं उनको करने में तो और भी ज़ियादा आपको चौकन्ना रहना चाहिए। रोज़े से ज़िन्दगी में तब्दीली होनी चाहिए आप रोज़ा रखें लेकिन गाली देना, गीबत करना, बद गोई, गुस्सा व बुग्ज़ न छोडें तो रोज से कोई फायदा नहीं।

असल बात तो यह है कि रोज़ा आपकी जिन्दगी के अन्दर वाज़ेह तबदीली कर दे। रोज़े में आपने मआसी से इज्तिनाब किया है तो उस पर कायम रहिए और उन मआसी का इरतिकाब न कीजिए जिनको आपने रोज़े की वजह से छोड़ दिया था। अगर रोज़े के खत्म होते ही तमाम मआसी में फिर मुब्तिला हो गये हैं तो इससे यही बात समझ में आएगी कि आपने रोज़ा तो रखा मगर रोज़ा मक़बूल नहीं हुआ।

आप इस तरह से रोज़ा रखिए कि कोई गैर मुस्लिम भी देखे तो समझे वाकई में रोज़ा रखते हैं और ये रमज़ान के दिन हैं पूरे एहतिराम को मलहूज़ रखा जाये। और तमाम तक़ाज़ों को पूरा किया जाए एक मरतबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब तुममें से कोई शख़्स रोज़ा रखे और उससे कोई उलझने लगे तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं। नफ़्स की तमाम कमज़ोरियों को दूर करे रोज़ा इस तरह से न रखे कि गुस्से से भरा बैठा रहे और लोग उससे महज़ इस वजह से गुफ़्तगू करने

में खौफ करें कि भाई, इनसे गुफ्तगू न करो वरना ये बिगड़ जाएंगे। खाने में ज़र्रा बराबर भी नमक की कमी हो तो गुस्से कि इन्तिहा कर दे, इन तमाम मआसी से परहेज़ करें। अगर रोज़े के तमाम तक़ाज़ों का लिहाज़ रखा गया तो उसका असर ग्यारह महीनों पर पड़ेगा और उसकी ज़िन्दगी में एक नुमायां तब्दीली होगी।

चौथी बात ये कि रोज़ा जिन चीज़ों से मअ़मूर किया गया है उसका लिहाज़ रखें रोज़े का ये मन्शा मालूम होता है कि अल्लाह तआला की तरफ ज़ियादा से ज़ियादा मुतवज्जेह हुआ जाये। न तिलावत की, न सद्का, न खैरात किया न तरावीह पढ़ी, सिर्फ रोज़ा रख लिया उससे कोई फाएदा नहीं तौबा व इस्तिग़फार का एहतिमाम हो दुआ की तरफ ज़ियादा तवज्जो हो आखिरी शब में एहतिमाम से उठें क्योंकि उसकी ज़ियादा अहमियत है अल्लाह तआला उस वक़्त पुकारता है कि है कोई मेरा बन्दा जो मुझे पुकारे और मैं उसको सुनूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस का बहुत एहतिमाम फरमाते थे।

खैरात व सद्क़ा का महीना-

इस महीने में खैरात व सद्का भी ज़ियादा करें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस माह को नेकी व ग़म ख़्वारी का महीना बताया इसका मतलब ये है कि अल्लाह की तरफ ज़ियादा तवज्जो हो और सद्क़ात व खैरात में ज़ियादा हिस्सा लें। लोगों के हालात का सुराग़ लगा कर पता चालाएं और उनके यहाँ तहाएफ़ और हदाया भेजें। अल्लाह के कितने बन्दे ऐसे हैं जिनको सिर्फ रोज़ा इफ़्तार करने के लिए मस्जिद में मिल जाता है। वह भूखे रहते हैं इसलिए ऐसे ज़रूरत मन्द लोगों को पता लगा कर उनकी मदद की जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसका बड़ा ही एहतिमाम फरमाते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक आता है कि लोगों में सबसे ज़ियादा सखी थे दूसरे मौके पर आता है कि तूफान की तरह सख़ावत करते थे और उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे और दिल खोलकर ग़रीबों बेवाओं और यतीमों की मदद करते थे।

तौबा इस्तिग़फार का महीना-

इन्सान को समझना चाहिए कि हमारी इबादत क्या, हम तो अल्लाह तआला के लायक कुछ भी इबादत नहीं कर सकते हम तौबा इस्तिगफ़ार भी अच्छी तरह नहीं कर सकते। इसलिए हमें भूखों लाचारों और मिस्कीनों ही की मदद करनी चाहिए ताकि मुमकिन है कि अल्लाह के किसी बन्दे का दिल खुश हो जाऐ तो अल्लाह तआला इसी को कुबूल फरमा ले और हमारा मकसद पूरा हो जाये हमारी इबादत हमारी तिलावत हमारी नमाज़ तो लायके मक़बूलियत नहीं लेकिन अल्लाह की राह में कुछ खर्च करने से मुम्किन है अल्लाह इसी को कुबूल फरमा ले। इस महीने में हमें पूरी तरह खैरात व सद्क़ात की तरफ मुतवज्जेह होना चाहिए और कमर कस लें कि इस महीने से पूरा फायदा उठाना है। हदीस शरीफ़ में आता है 'ऐ खैर के तलब करने वाले आगे बढ़

और ऐ बुराई के तलब करने वाले पीछे हट' दूसरी तरफ आता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन बन्दे से पूछेगा कि ऐ बन्दे मैं बीमार था तूने मेरी अ़यादत नहीं की मैं भूखा था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया, बन्दा जवाबन अर्ज करेगा ऐ खुदावन्द कुद्दूस तू कैसे बीमार हो सकता है? तू कैसे भूखा हो सकता है? तो अल्लाह तआला फरमायेगा, मेरा फलां बन्दा बीमार था, अगर तू उसकी अ़यादत करता तो मुझे वहां पाता, फलां बन्दा भूखा था अगर तू उसे खाना खिलाता तो तू मुझे वहां पाता।

ग़मगुसारी और ख़ैर ख़्वाही का महीना–

इसलिए ये ज़रूरी है कि जो मोहताज व बेवाऐं जो फुक़रा व मसाकीन हैं, उनकी मदद की जाये ग़रीबों की जो लड़कियां हैं उनकी शादी करा दी जाये अगर हमने ऐसा न किया तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन हम से मुहासबा करेगा और सख़्त बाज़ पुर्स करेगा ये हमारा माल नहीं है जिसे हम खर्च करते हैं बल्कि ये अल्लाह की अमानत है। हम अगर उसको तक़रीबात में खर्च करते हैं तो ग़लत करते हैं अगर उसको बेमहल सर्फ करते हैं तो नाजाइज़ करते हैं। हमारे लिए जाइज़ नहीं कि हम सर्फ करें। हमे उसकी फिक्र करनी चाहिए कि कितनी बेवाऐं और यतीम हैं कितने मोहताजो मसाकीन हैं। जिन्हें ज़रूरत है हमें उन तमाम जगहों पर सर्फ करना चाहिए जहाँ दूसरों की मदद व तआ़उन हो सके और अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो सके।

भाई कलाम पाक में आज भी वही तासीर है मगर हमारे पास ज़बान नहीं हमारे सीनों में दिल नहीं जिससे सहाबऐ किराम रज़ि0 और अहलुल्लाह तिलावत करते थे। इसलिए पहले अपनी ज़बान को पाक करो और दिल साफ करो उसके बाद कलामुल्लाह की तिलावत करोगे तो उसका असर होगा अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है।

हज़रत हकीमुलउम्मत मौलाना थानवी रह0 के मवाऐज़ में ये वाकिया मैंने पढ़ा है कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 के साहब जादे जब फारिगुत्तहसील हो कर तशरीफ लाये तो उनका वअ़ज़ हुआ और बहुत देर तक बयान हुआ रमज़ान का ज़माना था। उनको ये ख़्याल हुआ कि मैंने इतना लम्बा बयान किया कुरआन की आयतें पढ़ीं हदीसें पढ़ीं, बुजुर्गों के वाक़िआत सुनाऐ मगर किसी पर कुछ असर न हुआ। आखिर क्या बात है? फिर उसके बाद हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 खुद मजलिस में तशरीफ लाये आपने लोगों से मुखातिब हो कर फरमाया कि भाई मेरी सेहरी के लिए दूध रखा हुआ था रात में बिल्ली दूध पी गई, इस वजह से आज मैंने बग़ैर सेहरी के रोज़ा रख लिए इतना कहना कि सारे मजमेअ़ पर गिरया तारी हो गया सब लोग रोने लगे अ़जीब हाल हो गया। गिरया वजारी का एक समां बन्ध गया। हज़रत शेख रह0 की ज़बान में वह तासीर थी जिससे सारा मजमअ़ मुतास्सिर हो गया।

शेष पृष्ठ.....24.... पर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम, ईमान और एहसान (एक हदीस से)

कुछ सहा–बए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दर्मियान सय्यिदुल मुर्सलीन, महबूबे रब्बिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जल्वा फरमा थे, कि जिब्रील अलैहिस्सलाम अजनबी इन्सान की शक्ल में हाजिर हुए और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के करीब दो जानो बैठ गए और सवालात शुरुअ़ कर दिये, दरयाफ्त कियाः इस्लाम क्या है?जवाब मिला, इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और यह कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ काइम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और रास्ते की सुहूलतें मुहय्या हों तो हज करो, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा आपने सच फरमाया, सहाबा न जानते थे कि वह जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं, इसलिए तअ़ज्जुब में हुए कि खुद ही सुवाल करते हैं और खुद ही जवाब की तस्दीक़ करते हैं, फिर पूछा कि ईमान क्या है? आपने फरमाया कि ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फिरिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर क़ियामत के दिन पर, और अच्छी बुरी तक्दीर पर (कि दोनों अल्लाह की तरफ से हैं) कहा आपने ठीक फरमाया, फिर सुवाल किया, एहसान क्या है? आपने फरमाया एहसान यह है कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो, और अगर तुम उसे नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है, फिर कियामत के बारे में दरयाफ्त किया कि कब आएगी? आपने फरमाया कि इस बारे में जवाब देने वाला पूछने वाले से जियादा नहीं जानता फिर उसकी निशानियाँ पूछीं, आपने कियामत की बाज़ निशानियां बता दी, जब वह चले गये तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहा–बए–किराम को बताया कि वह जिब्रील थे तुमको तुम्हारा दीन सिखाने आये थे।

इस हदीस को अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने अपने वालिदे मुकर्रम हज़रत उमर रज़ि0 से बयान फरमाया है जो सहीह मुस्लिम की किताबुल ईमान में दर्ज है, शुरुअ़ में हज़रत जिब्रील के आने की तफ्सील और आखिर में कियामत की निशानियों को हज़्फ कर दिया है, यह हदीस हदीसे जिब्रील अलै0 के नाम से मशहूर है।

इस हदीस में उम्मत को इस्लाम की बुन्यादी बातें इजमाली तौर पर बताई गई हैं, रहीं और तफ्सीलात वह सब "मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं" में मौजूद हैं जब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल मान लिया तो हम पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही किये गये

कुर्आने करीम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सारे अक़्वाल व अफ़आल को मानना और उनको अपनी ज़िन्दगी में लागू करना ज़रूरी हो गया, सिवाए उन बातों के जो आपके लिए खास हैं, अल्लाह तआला ने आप पर वही करके हम को बता दिया कि रसूल जो दें वह लो और जिससे वह रोक दें उससे रुक जाओ (अल हश्रः 7)

एक और हदीस का मफ़्हूम–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ पूछने से रोक दिये गये थे पस हम लोग इस बात से खुश होते थे कि देहात से कोई आकिल आदमी आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल करे और हम लोग सुनें पस एक आदमी दीहात से आया और उसने कहा कि ऐ मुहम्मद मेरे पास आप का आदमी आया और उसने कहा कि आपका कहना है कि अल्लाह ने आपको रसूल बना कर भेजा है, आपने फरमाया उसने सच कहा, पस उसने पूछा कि आसमान किसने बनाया? आपने फरमाया अल्लाह ने, पूछा ज़मीन किसने बनाई, फरमाया अल्लाह ने, पूछा यह पहाड़ किसने जमाए? और उसमें जो है वह किसने बनाया? फरमाया अल्लाह ने उसने कहा, जिसने आसमान, ज़मीन और पहाड़ बनाए, उसकी कसम, क्या उसी ने आपको रसूल बनाया है? फरमाया हाँ, उसने कहा आपके आदमी ने बताया कि दिन रात में हम पर पाँच वक्त की नमाज़ें हैं, फरमाया उसने सच कहा, कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी ने आपको इसका हुक्म दिया है? फरमाया हाँ, उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हम पर हमारे मालों की ज़कात है, फरमाया उसने सच कहा, उसने कहा, जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी ने आपको इसका हुक्म दिया है?फरमाया हाँ उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हम पर साल में रमज़ान के रोज़े हैं, फरमाया उसने सच कहा, उसने कहा कि जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम, क्या उसी ने आपको इसका हुक्म दिया है, फरमाया, हाँ उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हज के रास्ते पर कुदरत हो तो हम पर हज है, आप ने फरमाया उसने सच कहा, रावी कहते हैं कि फिर वह यह कहते हुए चला गया कि जिसने आपको रसूल बनाया, उसकी क़सम इन बातों पर न तो कुछ बढाऊँगा न घटाऊँगा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर उसने अपना अहद सच कर दिखाया तो जन्नत में दाखिल होगा।

(सही मुस्लिम)।

कुछ अहम बातें–

- किसी नबी या रसूल अलैहिस्सलातु व स्सलाम की अदना तौहीन करने वाला काफ़िर है।
- किसी तौहीन न करने वाले पर जान बूझ कर (मआज़ल्लाह) तौहीने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

का इलज़ाम लगाना हराम है, और इस गुनाह में हक़्कुल इबाद भी है, जो सिर्फ तौबा से मुआफ़ न होगा बल्कि जिस पर इलजाम लगाया है वह भी मुआफ़ करे।

• हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दर्जा अल्लाह तआला की मख़्लूक में सबसे बड़ा है और यह शेअ़र आप पर सही है।

ला युमकिनुस्सनाउ कमा कान हक्कुहू
बाद अज़ खुदा बुज़ुर्ग तुई क़िस्सा मुख़्तसर

• लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अल्लाह की ज़ात या सिफ़ात में शरीक ठहराना शिर्क है। बेशक अल्लाह तआला ने फरमाया कि "आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा बशर हूँ मगर मेरी तरफ़ यह वही भेजी जाती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ एक है" (41:6)

• लेकिन यह बशरीयत ऐसी बशरीयत है कि उस की मिसाल नहीं।

❖❖❖

सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व असहाबिही व बारका वसल्लम

हम रमज़ान कैसे गुज़ारें.....

तो आखिर क्या बात थी? बात यह थी कि आपके दिल में वह दर्दो सोज़ था जिसका असर लोगों के दिलों पर पड़ता था हज़रत शेखुल्लमशाइख ने अपने इस हाल से ज़ाहिर फरमाया कि इल्म और चीज़ है बातिनी दौलत व कैफियत और चीज़ है। अल्लाह वाले जब बोलते हैं तो अल्लाह हीके लिए बोलते हैं इस वजह से उनके बोलने में असर होता है और जिस तरह अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है इसी तरह उनकी आँख में भी असर होता है। हक़ तआला उनको नूरे फरासत अता फरमाते हैं जिससे हक़ व बातिल में तमीज़ करते हैं।

हज़रत उस्मान जुन्नूरैन रज़ि0 ने एक मरतबा फरमाया कि लोगों को क्या हो गया है कि हमारे पास इस हाल में आते हैं कि उनकी आँखों से ज़िना टपकता है। तो ये नूरे फिरासत ही था। हदीस शरीफ में बद निगाही को आँखों का ज़िना फरमाया गया है। उसका असर आँखों में रहता है। जिसको अल्लाह अपने मख़सूस बन्दों पर कभी मुन्कशिफ फरमा देते हैं। अल्लाह वालों के पास बहुत संभल कर जाना चाहिए भाई इख़्लास ही अमल की रूह है एक शेअ़र याद आया है।

अमल की रूह है इख़्लास
जब तक ये न हासिल हो।
नहीं आऐगी ईमानों अ़मल में
तेरे ताबानी।।

कठिन शब्दों के अर्थ-

आमाले हसना= भले कर्म, एहतिसाब= जांच पड़ताल, फुक्दान= अभाव, माहौल= वातावरण, रिक़्कत= नम्रता, किब्र=घमण्ड, उज्ब= अहंकार अभिमान। इस्तेहज़ार= स्मरण, मुआविन= सहयोगी, तवानाई= शक्ति, नफ़्स= मन, मन की बातें, गीबत= पीठ पीछे बुराई करना, इजतिनाब= बचना, मआसी= पाप, एहतिराम= सम्मान, तक़ाजा= माँग, यतीम= अनाथ, इस्तिग़फ़ार = क्षमा याचना, ग़मगुसारी= सहानुभूति, फिरासत= विवेक। ज़िना= व्यभिचार, ताबानी= चमक, तहाइफ= तुहफा का बहुवचन, उपहार।

–देवनागरी लिपि में उर्दू

रोज़े के मसाइल

–हिन्दी लिपिः फौज़िया फ़ाज़िला

जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता और जिन से टूट जता है और क़ज़ा या कफ़्फ़ारह लाज़िम आता है उनका बयान–

अगर रोज़ेदार भूल कर कुछ खा ले या पी ले या भूले से बीवी से हमबिस्तर हो जाये तो उसका रोज़ा नहीं गया। अगर भूल कर पेट भर भी खा पी ले तब भी रोज़ा नहीं टूटता अगर भूल कर कई दफ़ा खा पी लिया तब भी रोज़ा नहीं गया।

एक शख़्स को भूल कर खाते पीते देखा तो अगर वह इस क़दर ताक़तदार है कि रोज़े से ज़ियादा तकलीफ़ नहीं होती तो रोज़ा याद दिला देना वाजिब है और अगर कोई कमज़ोर हो कि रोज़े से तकलीफ़ होती तो उसको याद न दिलाए खाने दे।

दिन को सो गया और ऐसा ख़्वाब देखा जिससे नहाने की ज़रूरत हो गई तो रोज़ा नहीं टूटा। दिन को सुरमा लगाना तेल लगाना ख़ुश्बू सूंघना दुरुस्त है इससे रोज़े में कुछ नुक़सान नहीं आता चाहे जिस वक़्त हो बल्कि अगर सुरमा लगाने के बाद थूक में या बलग़म में सुरमे का रंग दिखाई दे तो भी रोज़ा नहीं गया न मकरूह हुआ।

मर्द और औरत का साथ लेटना हाथ लगाना प्यार करना यह सब दुरुस्त है लेकिन अगर जवानी का इतना जोश हो कि उन बातों से सोहबत करने का डर हो तो ऐसा करना मकरूह है।

हल्क़ के अन्दर मक्खी चली गई या आप ही आप धुवां चला गया तो रोज़ा नहीं गया या गर्द व गुबार चला गया तो रोज़ा नहीं गया अलबत्ता अगर कसदन ऐसा किया तो रोज़ा जाता रहा।

लोबान वगैरह कोई धोनी सुलगाई फिर उसको अपने पास रख कर सूंघा तो रोज़ा जाता रहा इसी तरह हुक़्क़ा पीने से भी रोज़ा जाता रहता है अलबत्ता इस धुऐं के सिवा इत्र केवड़ा गुलाब फूल वग़ैरह और ख़ुशबू सूंघना जिसमें धुवां न हो दुरुस्त है।

दाँतों में गोश्त का रेशा अटका हुआ था या डली का चूरा वग़ैरह कोई और चीज़ थी उसको ख़िलाल से निकाल कर खा लिया लेकिन मुंह से बाहर नहीं निकाला आप ही आप हल्क में चला गया तो देखो अगर चने से कम है तब तो रोज़ा नहीं गया और अगर चने के बराबर या उससे ज़ियादा है तो जाता रहा अलबत्ता अगर मुंह से बाहर निकाल लिया था फिर उसके बाद निगल लिया तो हर हाल में रोज़ा टूट गया चाहे वह चीज़ चने के बराबर हो या उससे भी कम हो दोनों का हुक्म एक है।

थूक निगलने से रोज़ा नहीं जाता चाहे जितना हो, अगर पान खा कर खूब कुल्ली ग़रग़रा करके मुंह साफ़ कर लिया लेकिन थूक की सुर्ख़ी नहीं गई तो इसका कोई हरज नहीं रोज़ा हो गया।

रात को नहाने की ज़रूरत हुई मगर ग़ुस्ल नहीं किया दिन को नहाया तब भी रोज़ा हो गया। नाक को इतनी ज़ोर से सुड़क लिया कि हल्क़ में चली गई तो रोज़ा नहीं टूटा इसी तरह मुंह की लार सुड़क कर के निगल जाने से रोज़ा नहीं जाता। मुंह में पान दबा कर सो गये और सुबह हो जाने के बाद आंख खुली तो रोज़ा नहीं हुआ क़ज़ा रखे और कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

कुल्ली करते वक़्त हल्क़ में पानी चला गया और रोज़ा याद था तो रोज़ा जाता रहा कज़ा वाजिब है। कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं। आप ही आप क़ै हो गई तो रोज़ा नहीं गया चाहे थोड़ी सी क़ै हुई हो या ज़ियादा– अलबत्ता अगर अपने इख़्तियार से क़ै किया और मुंह भर हुई तो रोज़ा जाता रहा और अगर उससे थोड़ी हो तो ख़ुद से क़ै करने से भी नहीं गया। थोड़ी सी क़ै आई फिर आप ही आप हल्क़ में लौट गई तब भी रोज़ा नहीं टूटा अलबत्ता अगर क़सदन लौटा लेते तो रोज़ा टूट जाता।

किसी ने कंकरी या लोहे का टुकड़ा वग़ैरह कोई ऐसी चीज़ खा ली जिसको नहीं खाया करते और ना उसको कोई बतौर दवा के खाता है तो उसका रोज़ा जाता रहा लेकिन इस पर क़फ़्फ़ारा वाजिब नहीं और अगर ऐसी चीज़ खाई या पी जिसको लोग खाया करते हैं या कोई ऐसी चीज़ है कि यूं तो नहीं खाते लेकिन बतौर दवा के ज़रूरत के वक़्त खाते हैं तो भी रोज़ा जाता रहा और क़ज़ा और क़फ़्फ़ारा दोनों वाजिब हैं।

अगर औरत से हमबिस्तरी हुई तब भी रोज़ा जाता रहा उसकी क़ज़ा भी रखे और कफ़्फ़ारा भी दे। रोज़े के तोड़ने से कफ़्फ़ारा जब ही लाज़िम आता है जबकि रमज़ान शरीफ़ में रोज़ा तोड़ डाले और रमज़ान शरीफ के सिवा और किसी रोज़े के तोड़ने से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं होता चाहे जिस तरह तोड़े अगरचि वह रोज़ा रमज़ान की क़ज़ा ही का क्यों न हो। किसी ने रोज़े में नाक या कान में तेल डाला या जुल्लाब में अमल लिया और पीने की दवा नहीं पी तब भी रोजा जाता रहा लेकिन सिर्फ़ क़ज़ा वाजिब है और कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं और अगर कान में पानी डाला तो रोज़ा नहीं गया।

रोज़े में औरत की पेशाब की जगह कोई दवा रखना या तेल वगैरह कोई चीज़ डालना दुरुस्त नहीं अगर किसी ने दवा रखली तो रोज़ा जाता रहा क़ज़ा वाजिब है, कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

मुँह से खून निकलता है उसको थूक के साथ निगल गए तो रोज़ा टूट गया। अलबत्ता अगर खून थूक से कम हो और खून का मज़ा हलक़ में मालूम न हो तो रोज़ा नहीं टूटा।

अगर ज़बान से कोई चीज़ चख कर थूक दिया तो रोज़ा नहीं टूटा लेकिन बे ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है। हाँ अगर किसी औरत का शौहर बद मिज़ाज हो और यह डर हो कि अगर सालन में नमक पानी दुरूस्त न हुआ तो नाक में दम कर देगा उसको नमक चख लेना दुरुस्त है, और मकरूह नहीं।

शेष पृष्ठ.....38.... पर

आदरणीय लेखकों की सेवा में

हम अपने लेखकों के आभारी हैं, उनको धन्यवाद देते हैं और उनके लिए भलाई की दुआ करते हैं, हमारे आदरणीय लेखक बिना किसी वित्तीय लाभ के अल्लाह के वास्ते सच्चा राही को सहयोग देते हैं, अल्लाह उनको पूरा पूरा बदला दे। हम अपने नये लेखकों की सेवा में यह अनुरोध करते हैं कि उनमें जो दीनी आलिम हैं, तफ़सीर, हदीस और फ़िक्ह पर वही लिखें दूसरे हमारे आदरणीय लेखक, सामाजिक, नैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक आदि विषयों पर लिख कर अपने सच्चा राही को सहयोग दें, और इस प्रकार समाज की सेवा करके पुण्य कमाएं। ध्यान रहे लेखों में इस्लामिक विश्वास से टकराने वाली कोई बात न हो और भाषा सरल हो, और कोई लेख सच्चा राही के दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो।

सम्पादक

पद्य

अच्छा नही है जालिम हद से सिवा सताना

—मौ० सै० मु० सानी हसनी रह०

आता है याद हम को
रह रह के वह ज़माना
मामून आफतों से
था जब कि आशयाना
आबाद था चमन जब
बेख़ार था नशेमन
अह्ले चमन थे गाते
खुशियों का जब तराना
हाये चमन को ज़ालिम
सय्याद ने उजाड़ा
काँटों से भर दिया है
फूलों का आशियाना
आबाद जो चमन था
वीरान हो गया है
मुर्गे चमन बना है
सय्याद का निशाना
ऐ काश कोई कह दे
सय्याद से यह जा कर
अच्छा नहीं है जालिम
हद से सिवा सताना
अंजाम से तू ज़ालिम
शायद कि बे खबर है
तुझ को भी एक दिन है
रखाते सफ़र उठाना

❖❖❖

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: एक शख़्स के इन्तिकाल के वक्त उस की बीवी ने महर मुआफ कर दिया, लेकिन अब वह अपने शौहर के तर्के (छोड़ा हुआ माल) से अपना महर मांग रही है क्या माफ किया हुआ महर शौहर के तर्के से दिया जा सकता है?

उत्तर: बीवी के मुआफ करने से महर मुआफ हो गया अब उसको मुतालबे का हक नहीं है और शौहर के तर्के से मुआफ किया हुआ महर नहीं दिया जा सकता। (दुर्रे मुख्तार मअ़ रद्दे मुहतार: 248/8)

प्रश्न: अगर औलाद ना फरमान हो तो क्या वालिदैन अपनी औलाद को अपने तर्के से महरूम कर सकते हैं?

उत्तर: वरासत (मृतक सम्पत्ति) में मोरिस (मृतक) को कोई इख्तियार नहीं वह उसके वारिसों में शरीअत के मुताबिक तक्सीम होगी, मोरिस अपने वारिसों से चाहे खुश रहा हो चाहे नाराज अल्बत्ता मोरिस अपनी ज़िन्दगी में अपनी जायदाद जो चाहे करे लेकिन मरने के बाद जो जायदाद बचेगी वह वारिसों का हक है।

(फतावा हिन्दीया: 391/4)

प्रश्न: एक शख़्स ने अपनी बीमारी की हालत में एक तहरीर लिख कर अदालत में रजिस्ट्री करा दी उसमें अपनी लड़कियों को वरासत से महरूम कर दिया तो क्या उसके मरने के बाद उसकी वरासत में लड़कियाँ हिस्सा न पायेंगी?

उत्तर: आखिरी वक्त की बीमारी में लिखाई गई तहरीर वसीयत होती है और वसीयत वारिसों (उत्तराधिकारियों) में नाफिज (लागू) नहीं होती इसलिए लड़कियाँ शरीअत के मुताबिक उस तहरीर से महरूम न होंगी उनका हक रहेगा अलबत्ता लड़कियाँ अगर चाहें और दूसरे वरसा भी राजी हों तो वह अपना हक छोड़ सकती हैं।

(दुर्रे मुख्तार मअ़ रद्दे मुहतार: 493/8)

प्रश्न: एक शख़्स का इन्तिकाल हुआ उसके वारिसों में सिर्फ दो लड़के हैं, एक सरकारी नौकर है दूसरा एक दुकान चला रहा है, दुकान बहुत छोटी है आधी आधी करने में किसी के काम की न रहेगी, क्या दुकानदार भाई दुकान की आधी कीमत दूसरे भाई को देकर अकेले ले सकता है?

उत्तर: अगर दुकान और उसका सामान मरने वाले की जायदाद में से था तो वह दुकान और उसका सामान दोनों भाईयों में तक्सीम होगा अगर एक भाई दुकान और उसके सामान की आधी कीमत लेने पर राजी हो जाये और इस तरह दुकान दूसरे भाई को देदे तो इसमें शरअन कोई गुनाह नहीं होगा।

(फतावा हिन्दीया: 268/4)

(दुर्रे मुख्तार मअ़ रद्दे मुहतार: 248/8)

प्रश्न: एक शख़्स का

इन्तिकाल हुआ उसने दो शादियाँ की थीं, एक बीवी से दो लड़के और एक लड़की है दूसरी बीवी से सिर्फ एक लड़का है अब वारिसों में यही तीन लड़के और एक लड़की है उनमें तर्का किस तरह तक्सीम होगा?

उत्तरः इस सूरत में कुल जायदाद को सात हिस्सों में तक्सीम करके दो दो हिस्से तीनों लड़कों को देंगे और एक हिस्सा लड़की पायेगी। (यह बात गलत है कि दो बीवियों में से, एक से सिर्फ एक लड़का हो तो वह आधा तर्का पायेगा)।

(देखिऐ सू–रए–निसाः11)

प्रश्नः तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः तरावीह की नमाज़ मस्जिद में जमाअ़त से पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है, लेकिन अगर कुछ लोग मस्जिद में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ लेंगे तो सब की तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी लेकिन तरावीह की नमाज़ हर मुसलमान के लिए सुन्नते मुअक्किदा है इसलिए जिन लोगों ने जमाअ़त से तरावीह नहीं पढ़ी वह घर में यह सुन्नत अदा करें लेकिन उनको मस्जिद में जमाअत से तरावीह पढ़ने वालों से कम सवाब मिलेगा।

प्रश्नः क्या तरावीह की नमाज़, नाबालिग, हाफिज़े कुर्आन पढ़ा सकता है?

उत्तरः हनफी उलमा के नजदीक नाबालिग बालिगों को न तरावीह की नमाज़ पढ़ा सकता है न फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ा सकता है। हदीस में आया है कि बच्चा जब तक बालिग न हो जाये इमामत नहीं कर सकता। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाकः 398/2)

प्रश्नः औरतों के लिए तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः औरतों के लिए भी तरावीह की नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा है अल्बत्ता उनके लिए बेहतर यह है कि वह अपने घरों में अकेले यह सुन्नत अदा करें। (फतावा हिन्दीयाः 106/1)

प्रश्नः हाफिज़े कुर्आन अपने घर की औरतों की तरावीह की जमाअत की इमामत करे तो क्या यह दुरुस्त है? जब कि उन औरतों में इमाम की न महरम औरतें भी शामिल हों?

उत्तरः अगर इमाम के पीछे उसकी महरम औरतें मौजूद हों और साथ में न महरम औरतें भी शामिल हों तो यह नमाज़ दुरुस्त होगी।

(दुर्रे मुखतार : 529/1)

प्रश्नः तरावीह की नमाज़ एक सलाम से चार चार रकअ़तें पढ़ना कैसा है?

उत्तरः तरावीह की नमाज़, दो दो रकअ़त कर के दस सलामों से पढ़ना सुन्नत है, चार चार रकअ़तें एक साथ पढ़ना खिलाफे सुन्नत है।

(दुर्रे मुखतार : 72/2)

प्रश्नः अगर घरों में तरावीह की जमाअ़त हो रही हो तो उसमें लाउड स्पीकर का इस्तेमाल कैसा है?

उत्तरः अगर जमाअ़त इस कदर बड़ी हो कि तमाम मुक्तदियों (नमाज़ियों) के

लिए लाउड स्पीकर के बगैर इमाम की किराअ़त सुनना मुम्किन न हो तो उसकी इजाजत होगी लेकिन आवाज़ इस तरह बाहर न जाये कि लोगों को अपने काम काज और दीगर मशगूलियात में हरज हो और सुनने वालों के लिए आदाबे कुर्आन का लिहाज मुशकिल हो, क्योंकि ऐसी सूरत में बे अदबी होगी। (फतावा हिन्दीयाः 316/5)

प्रश्नः एक रात में पूरा कुर्आन मजीद तरावीह की नमाज़ में सुनाना कैसा है?

उत्तरः एक रात में अगर पूरा कुर्आन पूरे आदाब के लिहाज के साथ पढ़ा और सुना जाये तो शरअ़ में उसकी इजाजत है, लेकिन आज कल शबीना (एक रात की) तरावीह में जो रुसूमात और तरीके इख्तियार किये जाते हैं, वह सब नमाज और कुर्आन के आदाब के खिलाफ होते हैं, इसलिए यह तरीका इख्तियार करना कराहत से खाली नहीं।

(रद्दे मुहतारः 499/2)

प्रश्नः तरावीह पढ़ाने की उजरत लेना कैसा है?

उत्तरः तरावीह पढ़ाने की उजरत लेना और देना जाइज नहीं है अलबत्ता वकाए दीन (दीन की सुरक्षा) के लिए कुर्आन की तालीम और इमामत और अजान कहने की उजरत लेने देने की गुंजाइश है।

(दुर्रे मुख्तारः 46,47/5)

प्रश्नः क्या रोज़े की हालत में इन्जेक्शन लगवाने से रोज़ा टूट जायेगा?

उत्तरः रोज़े की हालत में इन्जेक्शन लगवाने से रोज़ा नहीं टूटता, चाहे इन्जेक्शन गोश्त में लगे या नस में।

प्रश्नः क्या रोज़े की हालत में पान तम्बाकू के इस्तेमाल से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः हाँ रोज़े की हालत में मुँह में तम्बाकू रखने या मसाला खाने या सादा या तम्बाकू वाला पान खाने या बीड़ी सिग्रेट और हुक्का पीने से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्नः क्या रोज़े की हालत में इन्हेलर लेने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः इन्हेलर चाहे नाक का हो और चाहे मुँह का हो उससे दवा अन्दर खींची जाती है इसलिए रोज़ा टूट जायेगा।

प्रश्नः क्या पाखाना लाने के लिए अमल लेना या एनीमा लगवाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः हाँ रोज़े की हालत में पाखाने के मुकाम से अमल लेने या एनीमा लेने से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्नः क्या रोज़े की हालत में ग्लूकोज़ या खून चढ़ाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः ग्लूकोज या खून नसों के जरिए बदन में पहुंचाया जाता है सीधे मेदे (आमाशय) या आँतों या दिमाग में नहीं पहुंचाया जाता इसलिए रोज़े की हालत में ग्लूकोज या खून चढ़ाने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः जनाज़े को कब्रस्तान ले जाते वक्त उसके ऊपर जो एक चादर उढ़ाते हैं उस चादर को क्या करना चाहिए? क्या उसे क़ब्र में तख़्ते डालने के बाद इस ग़रज़ से बिछा

शेष पृष्ठ .....34..पर

घर वापसी मगर किस की और किस घर

—इं0 जावेद इक़बाल

पिछले साल सन् 2014 में लोक सभा के इलेकशन में बी0जे0पी0 भारी बहुमत से विजय हासिल करके सत्ता में आ गई। साथ ही उसके कट्टरवादी लीडरों को हिन्दुत्ववादी मंसूबे खुले आम और मौक़ा बे मौक़ा उठाने की मुकम्मल आज़ादी मिल गई।

लव जिहाद, धर्म परिवर्तन बनाम घर वापसी, समान सिविल कोड, संविधान की धारा 370 को समाप्त करने और गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करने जैसे अनेक मुद्दे उठा कर जन साधारण (अवाम) को भड़काने और आपस में लड़ाने के प्रयास करना रोज़मर्रा की बात हो गई है, शपथ ग्रहण समारोह में प्रधान मंत्री की हैसियत से अपनी पहली तक़रीर में "सब का साथ और सब का विकास करने" की बात करने वाले मोदी जी ने हिन्दुत्ववादी उपरोक्त कथित मुद्दों पर चुप्पी साध ली। किसी भी अवसर पर उन्होंने अपने फ़िर्क़ापरस्त साथियों पर लगाम कसने का इशारा तक नहीं दिया। अलबत्ता अमेरिका के सदर और वहां के मीडिया के दबाव में आ कर प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्रीय सौहार्द बनाए रखने और सभी धर्मों का सम्मान करने की बात कही है मगर उनकी पार्टी के अन्य सदस्य अपनी विषैली भाषा का प्रयोग निरन्तर कर रहे हैं, उन पर प्रधानमंत्री जी की सलाह का कोई असर नहीं हुआ है।

इस समय हमारा मक़सद घर वापसी के मुद्दे पर विचार करना है ताकि यह बात तय की जा सके कि घर वापसी किस की और किस घर होना चाहिए। इस विषय पर विचार करने के लिए हमें आदि कालीन इतिहास और असमानी किताबों का अध्ययन करना पड़ेगा। तभी हमको आपने असली घर की पहचान और घर से भागे भटके की पहचान हो सकेगी।

जब हम इतिहास के पन्ने पलटते हैं तो पता चलता है कि हमारे इस देश के मूल निवासी द्राविड़ जाति के लोग थे। चार हज़ार साल पहले यहां हिन्दुओं का कोई नाम व निशान न था। ईसा अलैहिस्सलाम से लगभग ढाई हज़ार साल पहले कैस्पियन सागर के आस पास के निवासियों ने अपने इलाक़े से निकल कर तूरान (तुर्किस्तान), ईरान, अफ़गानिस्तान की ओर बढ़ना शुरु किया। जैसे जैसे ये लोग अपने मवेशियों के साथ नई नई चरागाहों की तलाश में आगे बढ़ते थे वहां के मुक़ामी लोगों से जंग करते, लूटमार करते और उनकी ज़मीनों पर क़ब्ज़ा कर लेते थे। इसीलिए ईरान के आर्यों ने इन्हें हिन्दू नाम दिया। जब ये लोग अफ़ग़ानिस्तान में दाखिल हुए तो ईरान से आने के कारण ये आर्य कहलाए। इन क़बीलों का आगे बढ़ने का सिलसिला ईसा अलैहिस्सलाम से पाँच छः सौ साल पहले तक जारी

रहा और अन्ततः ये लोग भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश कर गए। ईसा पूर्व लगभग 2500 साल से ईसा पूर्व 500 साल तक का दो हज़ार साल का जो ज़माना है वह मूर्ति पूजा के अतिरिक्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से शुरु हो कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा अन्य नबियों (ईशदूतों) का ज़माना है इसी ज़माने में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ चलने वाले सामरी के ज़रिये बछड़े की पूजा की घटना भी हुई। इन सब बातों का प्रभाव इन लोगों के जीवन पर इनकी आस्थाओं पर पड़ना स्वाभाविक ही है। इनमें के अनेक लोग उस समय एक सच्चे–सीधे रास्ते पर चलने वाले भी रहे होंगे।

अपने स्वभाव के मुताबिक यहां भारत भूमि में आ कर भी उन्होंने द्रविड़ कौमों से जंग की और उन्हें दक्षिण ओर भागने पर मजबूर कर दिया जो न भाग सके उन्हें अपना गुलाम बना लिया। जिस जिस इलाक़े से ये लोग गुज़रे वहां वहां की सभ्यता और धार्मिक आस्था क प्रभाव उन पर पड़ता रहा। अब यहां आने पर द्रविड़ों की धार्मिक कथायें भी इनकी आस्थाओं में जुड़ गईं। दूसरी ओर द्रविड़ों के मन में इन की नफ़रत घर कर चुकी थी जिसके कारण उन्होंने भी नई आने वाली क़ौम (आर्यों) की आस्थाओं की खूब खूब खिल्ली उड़ाई और इनके पूर्वजों पर तरह तरह के लांछन लगाए।

इस तरह लगभग दो हज़ार साल के इस सफ़र में हिन्दुस्तान आते आते इन लोगों की धार्मिक आस्थाओं में ज़बरदस्त मिलावट हो चुकी थी।

लगभग 1300 साल पहले सन् 712 ईस्वी मेंजब मुसलमान इधर आए तब भी इस क़ौम की लूटमार की फ़ितरत बाकी थी, यही वजह है कि मुसलमानों ने भी इन लोगों को पुराने ईरानी नाम "हिन्दू" से ही पुकारा।

हिन्दू नाम से पुकारने की एक वजह यह भी बताई जाती है कि मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्धु नदी पार करके जब राजा दाहिर पर विजय हासिल की तो फ़ार्सी ज़बान के प्रभाव से 'स' अक्षर की जगह 'ह' अक्षर बोला तो सिन्धु की जगह 'हिन्दु' हो गया, यही नाम उन्होंने यहां की क़ौम को दे दिया।

इस संक्षिप्त चर्चा का मक़सद केवल यह स्पष्ट करना है कि मूल रूप में न इस क़ौम का कोई निश्चित नाम था और न धर्म ही निश्चित था। हिन्दू नाम ईरानियों का दिया हुआ है और आर्य नाम ईरान की ओर से अफ़गानिस्तान आने के कारण अफ़ग़ानियों का दिया हुआ है। धार्मिक आस्थाओं के बारे में भी अगर ग़ौर करें तो आग की पूजा ईरानियों से सीखी, गौ पूजा सामरी की देन है, पुष्कर तीर्थ की परिक्रमा इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तालीमात के प्रभाव से है, मूर्ति पूजा के लिए क्या कहा जाये, इस रोग में तो शैतान ने हर इलाक़े और हर ज़माने में इंसानों को फंसाया है।

धार्मिक पहचान के जैसा ही भ्रम इन लोगों को अपनी धार्मिक किताबों के बारे में भी है। अव्वल तो आसमानी किताबों और

इंसानों की लिखी किताबों में फ़र्क करना ये नहीं जानते इसीलिए किस का कितना महत्व होना चाहिए आम तौर पर इन्हें नहीं मालूम। यही वजह है कि अवाम की अकसरियत रामायण, महा भारत और गीता (जो महाभारत का ही हिस्सा है) को ही अहमियत देती है। अलबत्ता पढ़े लिखे ज्ञानी व पंडित वेदों को ईशग्रंथ यानि खुदा की किताब का दर्जा देते हैं मगर यह बात वे भी नहीं जानते कि वेद किस के माध्यम से इंसानों को मिले, और जानें भी कैसे, क्योंकि ईशदूत, नबी या रसूल का तसव्वुर ही उनके यहां बिगड़ा हुआ है।

अतः इतिहास के अध्ययन से यह पता नहीं चलता कि वापसी किस घर की (धर्म की) होनी चाहिए, अब हम इस सवाल का जवाब ढूंढने के लिए दुनिया में सबसे महफ़ूज़ (सुरक्षित) खुदा की किताब, कुरआन पाक का अध्ययन करते हैं। क्योंकि कुरआन पूर्वकालीन आने वाली खुदा की सभी किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) करती है। (2:97) और स्पष्ट ऐलान करता है कि पिछली आस्मानी किताबें भी सच्चा सीधा रास्ता बताने वाली थीं और यह कुरआन उन सब में हुए फेर बदल को ठीक करने वाला है। (3:3–4)।

कुरआन के अध्ययन से पता चलता है कि अल्लाह तआला के नज़दीक धर्म तो केवल इस्लाम ही है (3:197) और आरम्भ में सभी इंसान एक ही धर्म (सच्चे रास्ते) पर थे (2:213)।

इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है और जिसका अर्थ है अल्लाह (ईश्वर) के सामने आत्म समर्पण करना यही सनातन धर्म है।

जिसमें एक खुदा की फ़र्माबरदारी इबादत की जाती है। मगर हमारे बिरादराने वेतन सनातन–शाश्वत की हक़ीक़त को पूर्णतः भूल चुके है।

कुरआन के इस अध्ययन से पता चला कि इस सृष्टि के रचनाकार, सृष्टा ने (ख़ालिक़े कायनात) ने आदि काल से अन्तिम काल तक सभी इंसानों को धरती के प्रत्येक क्षेत्र में एक ही धर्म दिया था और सदैव के लिए धर्म की तीन बुन्यादी बातें बताई थीं। एक यह कि भक्ति/इबादत सिर्फ़ एक मालिक, पालनहार ख़ुदा की की जाये, अन्य किसी को उसका साझी न ठहराया जाये। हर इलाक़े और हर भाषा में उस मालिक के नाम भिन्न भिन्न हैं, नामों की भिन्नता के कारण किसी भ्रम या विवाद में पड़ना और मतभेद खड़े करना उचित नहीं है। सब अच्छे अच्छे गुणवाचक (सिफाती) नाम उसी के हैं।

(कुरआन 59:24)

दूसरी बुन्यादी बात यह है कि इस जीवन के बाद आखिरत (परलोक) के जीवन पर, स्वर्ग–नरक पर पक्का यक़ीन किया जाये। प्रत्येक व्यक्ति को वहां जा कर अपने कर्मों का लेखा जोखा (स्पष्टीकरण/जवाबदेही) देना होगा। आखिरत का यक़ीन ही है जो इंसान को बुरे कामों से रोकता है और भले कामों की तौफ़ीक़ देता है।

तीसरी बुन्यादी बात यह है कि अपने ज़माने के नबी–रसूल की बातों को माना जाये, उसके पदचिन्हों पर चला जाये। जैसे जैसे

ज़माना आगे बढ़ता गया वैसे वैसे अपने ज़माने के नबी के अतिरिक्त गुज़रे ज़माने के नबियों को नबी मानना भी ज़रूरी क़रार दिया गया। इसीलिए इस अन्तिम काल में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पदचिन्हों पर चलना और गुज़रे ज़माने के सभी नबियों ईशदूतों पर आस्था रखना ज़रूरी क़रार पाया।

इस सिद्धान्त के विषय में यह ध्यान रहे कि उन नबियों, रसूलों पर पूरे यक़ीन के साथ आस्था व्यक्त की जायेगी जिन की चर्चा नाम लेकर कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने की है और जिनका नाम कुरआन में नहीं आया है मगर विभिन्न ज़माने में उनका मान सम्मान ईशदूत के रूप में किया जाता है, उनके बारे में हम सम्मान व्यक्त करते हुए यह कहेंगे कि सम्भव है कि वे भी कभी ईशदूत रहे हों।

बस यह है वह मूल धर्म जिसके लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया कि हर बच्चा दीने फ़ितरत पर पैदा होता है, बाद में उसके माता पिता और उसका समाज अपनी आस्थानुसार (अपने अक़ीदे के मुताबिक) उसे विभिन्न आस्थाओं में ढाल लेता है।

अतः मूल धर्म वही सिद्ध हुआ जो सदैव से चला आ रहा है जिसे अरबी भाषा में इस्लाम कहा गया है।

अब आप स्वयं निर्णय करलें कि वास्तविक वापसी किसे करना चाहिए और किस घर वापस होना चाहिए।

❖❖❖

हराम माल से बचें.....

थी आज उनको कोई पूछता भी नहीं है, कल जिनके द्वार पर हाथी बंधा था आज उनके पैरों में जूते भी नहीं यह सब माल का सम्मान न करने तथा उसको अनावश्यक जगहों पर व्यर्थ खर्च करने का परिणाम है। आपको चाहिए कि आप अपने खानदान की रस्मों पर नज़र डालें कि वह शादियों अ़कीके के समारोहों तथा खत्ने और मंगनी के अवसरों पर व्यर्थ खर्चों को देखें और सुधार का प्रयास करें अल्लाह आपकी मदद करे।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

सकते हैं कि मय्यित पर मिट्टी न गिरे?

उत्तरः जनाज़े के ऊपर जो चादर उढ़ा कर ले जाते हैं वह कफन के अलावा होती है वह घर के इस्तेमाल की चादर भी हो सकती है, चाहे सफेद हो चाहे हल्की रंगीन हो बाद में उसे अपने काम में लाएं, अगर चादर कफन वाले कपड़े से तैयार की गई है तब भी उसे कोई भी इस्तेमाल कर सकता है, वह मय्यत पर उढ़ाने से मन्हूस नहीं हुई ऐसा समझना गलत है। क़ब्र में तख्ते बिछाने के बाद अगर तख्तों के बीच झड़ी होती है तो फूस वगैरह से उसको बन्द कर देते हैं, अगर न बन्द करें और कुछ बारीक मिट्टी मय्यत पर गिर जाए तो कोई हरज नहीं। अगर वह चादर ज़ियादा कीमती न हो और इस गरज़ से कि मय्यत के ऊपर मिट्टी न गिरे तख्तों के ऊपर भी उसे बिछा सकते हैं।

❖❖❖

महिला विरोधी कुप्रथाएं

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

हमारे देश में कई महिला विरोधी कुप्रथाएं प्रचलित हैं। इनमें एक डायन कुप्रथा भी है, जिसके ख़िलाफ़ अभियान भी छेड़ा जाता है, लेकिन रोक लगने या इसमें कमी आने की ख़बर अभी तक नहीं मिल सकी है। एक अध्ययन में यह बात आयी है कि देश में हर साल लगभग दो सौ महिलाओं को डायन होने के आरोप में अपनी जान गवानी पड़ती है। स्वयं सेवी संस्था 'रूरल लिटिगेशन एण्ड एनटाइटलमेंट सेन्टर' के प्रभारी अवधेश कौशल के अनुसार, झारखण्ड, ओडिशा और हरियाणा के साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य आंध्र प्रदेश में भी इस तरह की घटनाएं अधिक होती हैं। इस कुप्रथा की ज़्यादातर पीड़ित अकेले रहने वाली विधवा महिलाएं हैं, जिनकी ज़मीन या सम्पत्ति हड़पने के लिए डायन बना दिया जाता है।

इस संस्था के एक अध्ययन में यह बात भी कही गयी है कि महिलाओं को डायन घोषित करने पर ही बस नहीं किया जाता, अपितु हद से बहुत आगे बढ़कर इन महिलाओं को बहुत ही बेरहमी से सार्वजनिक रूप से क़त्ल किया जाता है। पहले इन्हें पेशाब पीने या फिर मानव मल तक खाने के लिए विवश किया जाता है फिर सब लोगों के सामने इन्हें निर्वस्त्र करके पूरे गांव में घुमाया जाता है। फिर पेड़ में बांध कर उस समय तक ईंट और पत्थरों से मारा जाता है, जब तक वह महिला खुद को डायन (चुड़ैल, डाकिनी) न स्वीकार कर ले। फिर बहुत ही वीभत्स और निर्मम ढंग से गला रेत कर उसकी हत्या कर दी जाती है। साथ—साथ सभ्य समाज होने का ढोंग और दावा समानांतर रूप से चलता रहता है। राष्ट्रीय महिला आयोग के मुताबिक़ भारत में विभिन्न प्रदेशों के पचास से अधिक जिलों में यह कुप्रथा सबसे ज़्यादा फैली है।

देश के इन जिलों में ऐसी औरतों की सूची लंबी है जिन्हें डायन क़रार दे कर जुल्मो—सितम का शिकार बनाया जा चुका है। यह सिलसिला अब भी जारी है। इस कुप्रथा की कुछ मिसालें इस प्रकार हैं— राजस्थान में टोंक जिले की रहने वाली कमला मीणा तीन बच्चों की माँ हैं। पति ने एक दिन उसे डायन क़रार दे दिया और दूसरी शादी कर ली। कमला ने पत्रकारों को बताया, "दस साल हो गये मुझे दर—दर की ठोकरें खाते हुए। जिसके भी दरवाज़े पर दस्तक दी, खाली हाथ लौटा दी गयी। क़स्बे में कोई मकान तक किराये पर नहीं देता। जैसे ही पता चलता है,

मुझे मकान ख़ाली करने के लिए कह दिया जाता है।" कमला ने पत्रकारों को बताया कि उसे आधी रात को घर से निकाल कर मारा पीटा गया। उसने अपने जिस्म पर उभरे कुल्हाड़ी की मार के ज़ख़्म के निशान भी दिखाये। कमला के मुताबिक़ न उसे पुलिस से मदद मिली और न ही अदालत से न्याय।

हिमाचल प्रदेश की निर्मल चंदेल जब 24 साल की थी, उसके पति का देहावसान हो गया, जिसके लिए उसे ज़िम्मेदार ठहराया गया। दक्षिण राजस्थान की सुन्दर बाई विधवा है। उन्हें उनके भतीजे ने ही डायन घोषित कर दिया। एक दिन मृत घोषित कर पेंशन बंद करा दी। क्योंकि वह मेरी सम्पति हड़पना चाहता है। अब पेंशन वापस शुरु हो गयी है, मगर अब भी मैं डरी हुई हूं। एक अन्य घटना झारखंड के आदिवासी बाहुल लोहरदगा जिले के कुडू थाना क्षेत्र के टाटी डुमरटोली गांव की है। पीड़िता के पति दुतिया मुंडा एक साधारण किसान हैं। बेटे भी खेती–बाड़ी करते हैं। पीड़िता के पुत्र उमेश मुंडा के मुताबिक छह साल पहले भी उनकी माँ को डायन बता कर सरेआम पिटायी की गयी थी। उन्होंने अपनी बहन के साथ मिलकर माँ को बचाने का प्रयास किया, लेकिन गाँव वालों ने उन्हें खदेड़ कर भगा दिया। उनकी माँ गुहार लगाती रही, लेकिन उन्हें बुरी तरह प्रताड़ित किया गया।

पुलिस के मुताबिक़, पाँच नवम्बर की सुबह गाँव में पंचायत बिठायी गयी जिसमें कदनी देवी को सज़ा सुनायी गयी। इससे पहले भी लोहरदगा से सटे गुमला जिले में ऐसी ही घटना हुई थी जब लेमहा गाँव में एक विधवा महिला को डायन बता कर उनकी हत्या कर दी गयी थी। पुलिस ने बताया कि सुधवा मुंडा के एक बच्चे की मौत हो गई थी और उन्हें शक था कि उसी महिला ने कोई जादू टोना कर दिया था जिससे बच्चों की मौत हो गयी। पुलिस विभाग के एक आंकड़े के मुताबिक़, झारखण्ड में पिछले आठ महीने मे डायन बताकर लगभग 40 महिलाओं की हत्या कर दी गयी है।

विधि–विधान और नैतिकता को धता बताकर देश के गांव–देहातों और छोटे क़स्बों में अब भी कोई ओझा, भोपा, गुनिया और तांत्रिक किसी सामान्य औरत को कभी भी डायन घोषित कर देता है। आम तौर पर औरत के घर, परिवार और रिश्तेदार ऐसा करवाते हैं। देखा जाता है कि इस कुप्रथा के ख़िलाफ़ खाप पंचायतें भी अपना मुंह नहीं खोलतीं। महाराष्ट्र में सामाजिक कार्यकर्ता विनायक तावड़े और उनका संगठन कई सालों से डायन प्रथा के विरुद्ध अभियान चला रहे हैं। तावड़े के मुताबिक़ आदिवासी इलाक़ों में ये प्रथा बड़ी समस्या बनी हुई है। वे

बताते हैं कि कैसे एक ओझा गांव में एक महिला को डायन क़रार देने का उपक्रम करता है "जैसे गांव में कोई बीमार हो गया, तो कुछ लोग ज्वार के दाने बीमार के ऊपर सात बार घुमाकर ओझा के पास ले जाते हैं। ओझा एक दाना इस तरफ़, एक उस तरफ़ रख कर मंत्र बोलना शुरु करता है। फिर कहता है– हां, उसे डायन ने खाया है। उस डायन का घर नाले के पास है। उसमें पेड़ है, इतने जानवर हैं, आम के पेड़ हैं। महू का पेड़ है, इतने बच्चे हैं, मि0 तावड़े आगे बताते हैं, "इनमें जो बातें अनुमान से किसी पर लागू हो जाए, उस औरत को डायन क़रार दिया जाएगा। हमने ऐसे ही एक ओझा को गिरफ़्तार करवाया है।"

राष्ट्रीय महिला आयोग की निर्मला सावंत प्रभावलकर मानती हैं कि देश के पचास–साठ ऐसे जिले हैं जहां इस कुप्रथा के उदाहरण आये दिन मिल जाते हैं। महिला को डायन, कहीं डाकन, तेनी या टोनी, पनव्ती, मनहूस और ऐसे ही नामों से लांछित कर उसे घर से निकाल दिया जाता है। यह समस्या शिक्षित वर्ग में भी है। कभी ऐसा भी होता है कि जब कोई महिला राजनीति में आती है, तो लोग कहने लगते हैं कि वह जहां भी हाथ लगाएगी, नुक़सान हो जाएगा। आप चुनाव हार जाएंगे, ऐसा कहकर लांछित किया जाता है। पीड़ित महिलाओं में ज़्यादातर दलित, आदिवासी या पिछड़े वर्ग से है। सामाजिक कार्यकर्ता तारा अहलूवालिया ने राजस्थान में आदिवासी बहुल इलाक़ों में ऐसी पीड़ित महिलाओं की मदद की है। उनके अनुसार, "लगभग 36 ऐसे मामले मेरे पास हैं जिनमें औरत को डायन घोषित कर दिया गया। मगर पुलिस ने कोई मदद नहीं की। इस गंभीर स्थिति में इस कुप्रथा पर कैसे लगाम लग पाएगी? अहलूवालिया ने कहा, "यह समय है जब डायन विरोधी क़ानून बनना चाहिए। अकेले भीलवाड़ा जिले में ही कोई ग्यारह स्थान ऐसे हैं जो औरत के शरीर से डायन निकालने के लिए जाने जाते हैं। वहां हर सप्ताह भीड़ लगती है, इन औरतों के साथ हर तरह की हिंसा होती है।" रांची इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइकिएट्री एण्ड एलायड साइंसेंज के निदेशक सह मनोवैज्ञानिक डॉ0 अमूलरंजन सिंह कहते हैं, "किसी की बीमारी या मौत में भूत–प्रेत, ओझा गुनी की कोई भूमिका नहीं होती, लेकिन गांवों में अब भी तरह–तरह की भ्रांतियां हैं। इसे जागरूकता के ज़रिए ही दूर किया जा सकता है। महिला कार्यकर्ता लखी दास डायन कुप्रथा के ख़िलाफ़ कोल्हान इलाक़े में काम करती हैं। उनका कहना है, "इन मामलों में विधवाएं अधिक प्रताड़ित होती हैं।" उन्होंने बताया कि अध्ययन में पाया गया है कि महिलाओं को सार्वजनिक तौर पर मैला पिलाया जाता है। उनके बाल काट दिये जाते हैं और उन्हें निर्वस्त्र कर घुमाया

जाता है, लेकिन सुदूर इलाक़ों में होने वाली प्रताड़ना की अधिकतर घटनाएं प्रकाश में नहीं आ पाती हैं, झारखण्ड सरकार ने डायन प्रथा उन्मूलन की योजना बनायी है। इस योजना के नाम पर हर साल बीस लाख रूपये ख़र्च किये जाते हैं। यह योजना कारगर नहीं साबित हुई है। इस कुप्रथा पर रोक के लिए बड़े पैमाने पर काम करने की ज़रूरत है।

(कान्ति हिन्दी मासिक पत्रिका फरवरी 2015 से ग्रहीत)

❖❖❖

रोज़े के मसाइल.....

अपने मुंह से चबा कर छोटे बच्चे को कोई चीज़ खिलाना मकरूह है और अगर उसमें से कुछ हल्क़ में उतर जाएगी तो रोज़ा जाता रहेगा, मिस्वाक से दाँत साफ करना दुरुस्त है चाहे सूखी मिस्वाक हो या ताज़ी उसी वक़्त की तोड़ी हुई अगर नीम की मिस्वाक है और उसका कड़वापन मुंह में मालूम होता है तब भी मकरूह नहीं।

किसी ने भूले से कुछ खा लिया और यूं समझा कि मेरा रोज़ा टूट गया इस वजह से फिर क़सदन कुछ खा लिया तो अब रोज़ा जाता रहा फ़क़त क़ज़ा वाजिब है क़फ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

अगर किसी को क़ै हुई और वह समझा कि मेरा रोज़ा टूट गया इस गुमान पर क़सदन खा लिया और रोज़ा तोड़ दिया तो भी क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

रमज़ान के महीने में अगर किसी का रोज़ा इत्तिफ़ाक़न टूट गया तो रोज़ा टूटने के बाद दिन में कुछ खाना पीना दुरुस्त नहीं है सारे दिन रोज़ेदारों की तरह रहना वाजिब है।

किसी ने रमज़ान में रोज़े की नीयत ही नहीं की इसलिए खाता पीता रहा इस पर कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं कफ़्फ़ारा जब है कि रोज़े की नीयत करके तोड़ दे।

कज़ा का मतलब यह है कि जितने रोज़े छूटे हों दूसरे दिनों में उतने रोज़े रखे और कफ़्फ़ारा का मतलब यह है कि साठ रोज़े लगातार रखे अगर बीच में नागा हो जाये तो फिर साठ रोज़े लगातार पूरे करे अलबत्ता औरत हैज़ व निफास की वजह से बीच में रोज़े न रख सके तो पाक होते ही रोजे रखने शुरु कर दे और नापाकी के छूटे हुए रोज़े आगे लगातार पूरे कर ले जैसे किसी औरत ने कफ़्फ़ारे के पचीस रोज़े रखे थे कि हैज़ के सबब पाँच दिन का नागा हो गया तो वह पाक होते ही फिर रोज़े रखने शुरु कर दे, पचीस रोज़ों के बाद फिर हैज़ के सबब पाँच दिन का नागा हुआ, तो फिर पाक होते ही दस रोज़े लगातार रख करके साठ रोज़े पूरे करे।

अगर कोई शख़्स क़फ़्फ़ारे के साठ रोज़े लगातार न रख सके तो एक ग़रीब मुसलमान को दोनों वक़्त साठ दिनों तक पेट भर खाना खिलाये या साठ मिसकीनों को एक ही दिन दोनों वक़्त पेट भर के खाना खिलायें या साठ मिस्कीनों को अलग अलग हर एक को 1600 ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत अदा करे।

(बिहिश्ती जेवर से ग्रहीत)

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—इदारा

न्युयार्क में स्कूलों में ईद की छुट्टियों की मंजूरी-

न्युयार्क (एजेंसी) अमेरिका के शहर न्युयार्क के महापौर बिल डी ब्लासीव ने चुनावी प्रचार के दौरान मुसलमानों से किया गया अपना वादा पूरा कर दिया है और उन्होंने सरकारी स्कूलों के कैलेण्डर में मुस्लिम छात्र—छात्राओं के लिए दो छुट्टियों की और बढ़ोत्री कर दी है। अब मुस्लिम छात्र अपने दो पवित्र दिन ईदुल्फित्र और ईदुल्अज़हा के अवसर पर एक—एक छुट्टी कर सकेंगे। 2015—16 शिक्षण सत्र के दौरान 24 सितंबर को ईदुलअज़हा के अवसर पर मुस्लिम छात्रों को छुट्टी होगी। जबकि ईदुल्फित्र के अवसर पर आगामी वर्ष 2016 ई0 से छुट्टी हुआ करेगी।

महापौर का कहना है कि यह क़दम न्युयार्क की सांस्कृतिक व धार्मिक विविधता को दर्शाता है। उन्होंने एक वक्तव्य में कहा कि "हमने परिवारों से अपने शिक्षण वर्ष में परिवर्तन लाने का वादा किया था ताकि इससे हमारे शहर की सांस्कृतिक विविधता और दृढ़ता को दर्शाया जा सके। "अब हज़ारों मुस्लिम परिवारों को अपने पवित्र दिन मनाने और बच्चों को स्कूल भेजने में से किसी एक को नहीं चुनना पड़ेगा" ज्ञात हो कि न्युयार्क के सरकारी स्कूलों में मुस्लिम छात्रों की संख्या लगभग दस प्रतिशत है लेकिन न्युयार्क पहला अमेरिकी शहर नहीं है जहाँ मुसलमानों को ईदुलफित्र और ईदुलअजहा के अवसर पर सरकारी स्कूल बंद करेंगे बल्कि इससे पहले वर्मोंट, मीसा, चिवस्टिस और न्युजर्सी के कुछ क्षेत्रों में इन दिनों के अवसर पर मुस्लिम छात्रों को छुट्टी दी जाती है। ज्ञात हो कि किसी मुस्लिम मम्युनिटी के नेता एक ज़माने से पवित्र दिनों के अवसरों पर स्कूलों में सरकारी छुट्टी और उन्हें बंद रखने की मांग करते चले आ रहे थे।

❖❖❖

ईश भय पैदा करो

यदि चाहते हो
घूस खोरी दूर हो
यदि चाहते हो
काम चोरी दूर हो
यदि चाहते हो
दूर भ्रष्टाचार हो
यदि चाहते हो
दूर अत्याचार हो
यदि चाहते हो
नारियाँ सुरक्षित हों
यदि चाहते हो
बेटियाँ सुरक्षित हों
तो चाहिए तुमको यही कि
ईश भय पैदा करो
क़ानून पर निर्भर न हो
ईश भय पैदा करो

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

—इदारा

विभिन्न वाक्य مختلف جملے

अल्लाह अल्लाह कर	वह निब दो	यह खत दे दो
اللہ اللہ کر	وہ نب دو	یہ خط دے دو
नबी पर सलाम पढ़	हक पर चल	अब चल दो
نبی پر سلام پڑھ	حق پر چل	اب چل دو
दस दिन रुक	चुन कर दो	बद से बच
دس دن رک	چن کر دو	بد سے بچ
अब रस दे	बस चुप रह	रब से डर
اب رس دے	بس چپ رہ	رب سے ڈر
यह बत दो	पुल पर जा	दिल से सुन
یہ بط دو	پل پر جا	دل سے سن
वह सी दे	सच सच कह	हल ले कर चल
وہ سی دے	سچ سچ کہہ	ہل لے کر چل
सिल दे दो	दस तक गिन	जो हो सो हो
سل دے دو	دس تک گن	جو ہو سو ہو
अब सो जा	उससे मत लड़	जिसको रब का डर है
اب سو جا	اس سے مت لڑ	جس کو رب کا ڈر ہے
या रब कह	हट मत कर	उसको किस का डर है
یا رب کہہ	ہٹ مت کر	اس کو کس کا ڈر ہے
मिल कर चल	हम को रस दो	गुल ना कर
مل کر چل	ہم کو رس دو	غل نہ کر